मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति (ईआरसी),

आईआईएम अमृतसर की रिपोर्ट

07 मार्च, 2022

प्रोफेसर सैबल चट्टोपाध्याय
प्रोफेसर जी रघुराम
प्रोफेसर एल वी रमण

प्रस्तावना:

दि. 31 जनवरी, 2018 से लागू भारतीय प्रबंध संस्थान अधिनियम 2017 और स्वयं के विनियमों को ध्यान में रखते हुए, आईआईएम अमृतसर मंडल (आईआईएमएएसआर) ने तीन विशेषज्ञों की एक मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति (ईआरसी) स्थापित की:

प्रोफेसर सैबल चट्टोपाध्याय, संचालन प्रबंधन के प्रोफेसर और पूर्व निदेशक, भारतीय प्रबंध संस्थान, कोलकता

प्रोफेसर जी रघुराम, प्रधान शैक्षणिक सलाहकार, राष्ट्रीय रेल एवं परिवहन संस्थान, तथा पूर्व निदेशक, भारतीय प्रबंध संस्थान, बंगलुरु

प्रोफेसर एल.वी. रमण, वित्त एवं लेखा के प्रोफेसर, भारतीय प्रबंध संस्थान, इंदौर

दि. 8 दिसंबर, 2021 को आईआईएमएएसआर के निदेशक के साथ ईआरसी भेट हुई।

इस बैठक में अन्य लोगों ने प्रोफेसर रघुराम से ईआरसी की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। यह भी निर्णय लिया गया कि डेटा इनपुट पर निर्णय लेने के लिए ईआरसी सदस्य आपस में मिल सकते हैं और आईआईएमएएसआर का दौरे के साथ आगे की योजना बना सकते हैं।

मंडल के सचिव श्री लक्ष्मणदेव बी गोहिल, यह श्री प्रिंस सिंघारी, समन्वयक, निदेशक कार्यालय के सहयोग के साथ समन्वयक अधिकारी बनाए गए।

दि. 20 दिसंबर और 24 दिसंबर,2021 को ईआरसी की दो ऑनलाइन बैठकें हुईं। श्री गोहिल द्वारा अनुरोध के अनुसार विभिन्न डेटा इनपुट उपलब्ध कराए गए थे। इसे आईआईएमएएसआर में इसके मुद्रित प्रतियों को भी उपलब्ध कराया गया था।

ईआरसी द्वारा आईआईएमएएसआर का दौरा 29 दिसंबर से 31 दिसंबर, 2021 तक किया गया था। प्रस्तुत आंकड़ों की जांच के अलावा, ईआरसी ने आईआईएमएएसआर की अपनी तीन दिवसीय यात्रा के दौरान कई हितधारकों के साथ बैठकें (प्रदर्श-1) की थीं।

इसके अलावा, अध्यक्ष महोदय ने दि. 26 दिसंबर, 2021 को दिल्ली में पूर्व छात्रों और दि. 28 दिसंबर, 2021 को आईआईएमएएसआर में निदेशक और समन्वय अधिकारियों से व्यवस्थाओं की जाँचे के लिए बैठक की। ईआरसी के दो सदस्यों ने एक सतत समापन बैठक में निदेशक से मिले और फिर 1 जनवरी, 2022 को एक सामाजिक कार्यक्रम में संकाय सदस्यों से भी मुलाकात की।

इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए आपस में टेलीफोन और ईमेल/व्हाट्सएप द्वारा जानकारी आदान-प्रदान करने के अलावा, ईआरसी ने 12, 19, 24, 28 और 31 जनवरी को ऑनलाइन बैठकें कीं। अनुरोध के अनुसार अधिक डेटा उपलब्ध कराया गया था। प्रदर्श-2 यह ईआरसी को उपलब्ध कराए गए सभी डेटा की सूची प्रस्तुत करता है।

ईआरसी प्रदान किए गए विभिन्न इनपुट के लिए मंडल, निदेशक, समन्वय टीम, संकाय, कर्मचारियों, छात्रों, भर्तीकर्ताओं तथा पूर्व छात्रों सहित सभी हितधारकों से प्राप्त समर्थन हेतु अपना आभार व्यक्त करना चाहता है।

सैबल चट्टोपाध्याय जी रघुराम एल.वी. रमण

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1	संक्षिप्त विवरण	4 से 6
2	शासन एवं नीति	7 से 9
3	शिक्षाक्रम	10 से 13
4	छात्र	14 से 15
5	संकाय एवं क्षेत्र प्रोफ़ाइल	16 से 19
6	अनुसंधान एवं केंद्र	20 से 22
7	कार्यकारी शिक्षा एवं उद्योग संपर्क	23 से 24
8	वित्त एवं प्रशासन	25 से 26
9	संरचना	27
10	वैश्वीकरण एवं स्थानीयकरण	28 से 29
11	नैतिकता, उत्तरदायित्व एवं स्थिरता	30 से 32
12	निष्कर्ष	33 से 34
	प्रदर्श-1: ईआरसी के साथ बैठकों की अनुसूची	35 से 39
	प्रदर्श-2: ईआरसी को प्रस्तुत सूचना की सूची	40 से 42
	प्रदर्श-3: वित्तीय विवरण	43

भाग -1: संक्षिप्त विवरण

तीसरी पीढ़ी के सात आईआईएम में से एक आईआईएम अमृतसर (आईआईएमएएसआर) है, जिसे औपचारिक रूप से आईआईएम अमृतसर सोसाइटी के पंजीकरण पर 27 जुलाई 2015 को स्थापित किया गया था। आईआईएमएएसआर की स्थापना शिक्षा मंत्रालय (पूर्व के मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा पंजाब सरकार के सहयोग से की गई थी। अन्य सभी तीसरी पीढ़ी के आईआईएम की तरह, आईआईएमएएसआर को शुरुवाती वर्षों में एक पुराने आईआईएम द्वारा परामर्श दिया जाना था, यह भूमिका आईआईएमएएसआर के लिए आईआईएम कोझीकोड के पास थी। अन्य आईआईएम के विपरीत, यह परामर्शदाता आईआईएम अधिक अंतर पर था, जिसके लिए कम से कम एक दिन की बहु-उड़ान यात्रा की आवश्यकता होती थी। छात्रों का पहला बैच अगस्त 2015 में दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम (पीजीपी) के रूप में था। आईआईएमएएसआर शासी मंडल का गठन 14 अक्टूबर 2015 को किया गया था।

संसाधनों से संबंधित, पंजाब सरकार ने कार्यालयों और कक्षाओं के लिए पंजाब इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के भवन के हिस्से के साथ आईआईएम परिसर हेतु प्रदान किया। शिक्षा मंत्रालय द्वारा उन्नयन, उपकरण और पुस्तकालय के लिए एक पूंजी अनुदान प्रदान किया गया था। छात्रावास का प्रबंध लागत के आधार पर किया जाना था। यह 25 से 30 मिनट बस के समय के साथ लगभग 10 किमी दूर स्थित है। कुछ आवश्यक अतिरिक्त कार्यालय परिसर लीज भुगतान पर, मुख्य परिसर के निकट ले लिया गया है। स्थायी परिसर हेतु पंजाब सरकार ने 61 एकड़ भूमि उपलब्ध करायी है, जो निर्माणाधीन है। शिक्षा मंत्रालय ने लगभग 343 करोड़ रुपये के स्थायी परिसर निर्माण के लिए एचईएफए के माध्यम से एक ऋण लिया है, जिसमें से 87.5% एक पूंजीगत अनुदान है, और 12.5% का भुगतान आईआईएमएएसआर द्वारा किया जाना है।

संचालन के संदर्भ में, शिक्षा मंत्रालय वर्ष 2022-23 तक परिचालन खर्च के लिए प्रति पदवी छात्र को 5 लाख रुपये का अनुदान प्रदान करता है, जो अनुदान इसके आरंभ के बाद से अधिकतम 90 करोड़ रुपये (1800 छात्र-वर्ष) के अधीन है। आईआईएमएएसआर यह शिक्षा शुल्क लेने और अन्य शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से आय अर्जित करने के लिए स्वतंत्र है।

आईआईएमएएसआर, अन्य सभी आईआईएम के साथ, 31 जनवरी, 2018 से लागू भारतीय प्रबंध संस्थान अधिनियम - 2017 के निर्माण हुआ है। अधिनियम ने मंडल द्वारा शासन के तहत संस्था को अधिक स्वायत्तता दी। एक महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक आईआईएम पदवी प्रदान करने वाला संस्थान बन गया और इसलिए पीजीपी को केवल प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएम) के अलावा एमबीए से सम्मानित किया जा सकता था।

आईआईएमएएसआर के पहले पूर्णकालिक निदेशक, प्रोफेसर नागराजन रामामूर्ति, 15 जुलाई, 2019 को पांच वर्ष के कार्यकाल के साथ 14 जुलाई, 2024 तक नियुक्त हुए।

पिछले कुछ वर्षों में आईआईएमएएसआर ने कई उपलब्धियां प्राप्त की है। वर्ष 2015-17 में एक पदवी प्रदान करने वाले शिक्षा कार्यक्रम से शुरू होकर, वर्ष 2021-22 में इसने छात्रों को एमबीए के सातवें बैच सहित पांच पदवी शिक्षा कार्यक्रमों में प्रवेश दिया। प्रबंध में पांच वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम तैयार है। एमबीए कार्यक्रमों में प्रवेश करने वाले छात्रों की संख्या वर्ष 2015 के 44 से बढ़कर वर्ष 2021 में 309 हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2021-22 के दौरान कुल छात्र संख्या 521 हो गई है। इसने कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम और परामर्श परियोजनाएं शुरू की हैं। एक दीर्घ अवधि का प्रमाणपत्र कार्यक्रम शुरू होने जा रहा है। दिसंबर 2021 तक, आईआईएमएएसआर मे शिक्षण और अनुसंधान से संबंधित कुल 28 पूर्णकालिक संकाय थे। यह संख्या वर्ष 2018-19 के संख्या से 10 से अधिक हुई है।

कुल आय यह वर्ष 2018-19 में 14 करोड़ रुपये से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 59 करोड़ रुपये (अपेक्षित) हो गई है, और संभवत: वर्ष 2022-23 में 80 करोड़ रुपये से अधिक हो जाएगी। हाल ही में वार्षिक अधिशेष 20 करोड़ रुपये से ऊपर है, जो मार्च 2022 तक 78 करोड़ रुपये और मार्च 2023 तक संभवतः 100 करोड़ रुपये को जोड़ देगा। वित्तीय वर्ष 2023-24 से, शिक्षा मंत्रालय का अनुदान बंद हो जाएगा, और एचईएफए पुनर्भुगतान पांच वर्षों के लिए प्रति वर्ष लगभग 9 करोड़ रुपये से शुरू होगा। इसके लिए आय पर कड़ी नजर रखने की आवश्यकता होगी।

उपरोक्त और समग्र मूल्यांकन के आधार पर, ईआरसी ने आईआईएमएएसआर की निम्नलिखित शक्तियों और कमियों को स्पष्ट किया है:

1. शक्तियां:
    - क- 'उचित' दृष्टिकोण के साथ गुणवत्ता धारक संकाय
    - ख- निदेशक - कार्य प्रेरित, विस्तार उन्मुख, कार्य द्रष्टा एवं प्रत्यायोजन तज्ञ, नेटवर्क वृद्धि हेतु तत्पर
    - ग- प्रणाली एवं संरचनाओं की उपलब्धता
    - घ- समर्थक मंडल
    - ङ- स्थान – अमृतसर। यह एक लाख से अधिक आबादी वाला बड़ा शहर है। अमृतसर यह अंतरराष्ट्रीय स्तर का आकर्षक सांस्कृतिक और पर्यटन केंद्र है। यह शहर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन के साथ है और राजमार्गों के साथ जुड़ा हुआ है। 100 किमी के दायरे में महत्वपूर्ण उद्योग और व्यवसाय हैं। यहां बच्चों के लिए अच्छी स्कूली शिक्षा और जीवनसाथी के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

2. कमियां

क- स्थान के अनुसार विभाजित है और अपर्याप्त अस्थायी परिसर का बुनियादी ढांचा। नए परिसर से यह कमी पूर्ण की जानी चाहिए।

ख- निर्णय लेने पर प्रक्रियाएं और संकाय स्वामित्व। सभी प्रमुख प्रक्रियाएं निदेशक केंद्रित हैं। जबकि अधिक से अधिक संकाय स्वामित्व की दिशा में कार्य किया जा रहा है, और अधिक होने की आवश्यकता है, जैसे संकाय विकास एवं मूल्यांकन समिति।

ग- कर्मचारियों की क्षमता

घ- बजट संतुलन आवश्यकताओं से प्रेरित विशेष रूप से दीर्घ अवधि के कार्यक्रमों पर बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं। इससे गुणवत्ता और संस्थागत प्रतिमा पर प्रभाव पड़ सकता है।

आईआईएमएएसआर के लिए मौलिक प्रश्न यह है कि एक प्रबंध शिक्षा संस्थान के रूप में एक विशिष्ट और स्थायी प्रस्तुति करने की दिशा में कैसे आगे बढ़ें। राष्ट्रीय स्तर पर 20 आईआईएम में प्रतिस्पर्धा और उत्तरी क्षेत्र में छह आईआईएम से अधिक निकटता को देखते हुए, यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

इसे इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए कि भारत में आर्थिक विकास हेतु मानव क्षमता निर्माण करने के लिए अधिक आईआईएम संस्थान स्थापित किए गए हैं। जबकि भारत विकास के पथ पर जो दोहरे अंकों में पहुंच रहा है, उसमे पंजाब में उतार-चढ़ाव देखा गया है। पंजाब जीडीपी हेतु एक उद्यमशील राज्य रहा है, यह वर्ष 1981 में भारतीय राज्यों में प्रथम स्थानपर था लेकिन हाल के वर्षों में गिरकर 15वें स्थान पर आ गया। इसकी अर्थव्यवस्था का 25% का कृषि क्षेत्र यह भारतीय राज्यों में सबसे अधिक है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र भी आकांक्षी हैं, आधुनिकीकरण और विकास के अवसरों पर कार्यरत हैं।

मूल्यांकन एवं समीक्षा करते समय ईआरसी ने उपरोक्त मौलिक प्रश्न और संदर्भ को प्रथम स्थान रखा है। यह रिपोर्ट 12 भागों में लिखित है। प्रथम भाग एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। द्वितीय भाग शासन एवं नीति पर केंद्रित है, इसके बाद शिक्षाक्रम और फिर छात्र हैं। पांचवां भाग यह संकाय एवं क्षेत्र प्रोफाइल पर है, उसके बाद अनुसंधान, और केंद्र, और फिर कार्यकारी शिक्षा एवं उद्योग संपर्क पर है। आठवां भाग यह वित्त एवं प्रशासन पर है और उसके बाद संरचना के बारे मे विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद हमने विशेष विषयों पर ध्यान दिया हैं। दसवें भाग में, हम वैश्वीकरण और स्थानीयकरण में मुद्दों को जानकारी प्रस्तुत करते हैं, और इसके बाद नैतिकता, उत्तरदायित्व और स्थिरता पर एक भाग प्रस्तुत करते हैं। बारहवां भाग यह निष्कर्ष प्रदान करता है।

भाग -2: शासन एवं नीति

संस्थान उद्योग क्षेत्र के सदस्यों, शिक्षाविदों और राष्ट्रीय एवं राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों के साथ शासी मंडल द्वारा शासित है। वर्तमान में मंडल में दो संकाय सदस्यों सहित 13 सदस्य हैं। निदेशक, संकायाध्यक्षों और विभिन्न शैक्षणिक समितियां संस्थान की आंतरिक शासन प्रणाली का गठन करती हैं।

वर्तमान में, संस्थान का शासी मंडल और इसका कार्यकारी नेतृत्व आईआईएम अधिनियम 2017 के अनुरूप प्रणाली और प्रक्रियाओं को स्थापित करने पर कार्यरत है। जबकि सरकार आईआईएम की दैनिक गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करती है, मात्र, समाज में वंचित समूहों के लिए आरक्षण और संकाय और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए भर्ती मानदंड जैसे कुछ राष्ट्रीय नीति दिशानिर्देश होते हैं जिनका आईआईएम को पालन करना होगा। संस्थान को शुल्क, नए कार्यक्रमों, कार्यकारी शिक्षा और परामर्श सेवाओं के संबंध में कार्यात्मक स्वायत्तता प्राप्त है। इसे सरकार या किसी मूल संगठन के साथ अपने अधिशेष को साझा करने की आवश्यकता नहीं है और यह अपनी निवेश प्राथमिकताओं पर निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है।

"विश्व स्तर पर जुड़ा तथा स्थानीय रूप से उत्तरदायी, गुणवत्ता प्रबंधन शिक्षा, सलाहकार और अनुसंधान प्रदान करने वाले एक विशेष प्रबंध संस्थान के रूप में समाज द्वारा सन्माणित होना" यह संस्थान का ध्येय है।

"विद्वता एवं प्रामाणिकता के आधार पर नेतृत्व विकसित कर समाज को प्रभावी रूप से बनाए रखने के लिए सक्षम करना" यह संस्थान की लक्ष्य है।

संस्थान का लोगो कुछ संशोधनों के साथ स्वर्ण मंदिर, अमृतसर में स्थित "जीवन पुष्प (फ्लॉवर ऑफ लाइफ)" टाइल डिजाइन से प्रेरित है, और लोगो के रंग हमारे राष्ट्रीय ध्वज से प्रेरित हैं जो एक वैश्विक मंच पर अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति संस्थान के समर्पण को दर्शाता है। इसमें " प्रज्वलित संभावनाएं (इग्निटिंग पॉसिबिलिटीज)" की शीर्ष पंक्ति भी है। कुछ प्रमुख संस्थागत मूल्य निश्चित करने पर संस्थान सक्रिय रूप से विचाराधीन हैं।

अनुसंधान और विकास, निरंतर पाठ्यचर्या नवाचार, कार्यक्रम की प्रस्तुति की नियमित समीक्षा, कॉर्पोरेट क्षेत्र के साथ जुड़ाव और अंतरराष्ट्रीय और बाहरी संबंधों को मजबूत करने के रूप में अपनी लक्ष्य और ध्येय के लिए संस्थान ने अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई है।

संस्थान के कामकाज की आवधिक समीक्षा करना; बजट की निगरानी; शिक्षण शुल्क दरों, पदोन्नति, संकाय प्रोत्साहन, और इसी तरह की पुष्टि करना, इन जैसे विषयों पर शासी मंडल मुख्य रूप से संबंधित है। वर्तमान में, मंडल की एक वर्ष में चार बैठकें होती हैं।

जबकि निदेशक आईआईएमएएसआर का शैक्षिक एवं प्रशासनिक प्रमुख है और शासी मंडल के लिए भी जिम्मेदार है, शैक्षिक एजेंडे का दैनिक प्रशासन एक संकायाध्यक्ष और कार्यक्रमों/गतिविधि समितियों के अध्यक्षों द्वारा किया जाता है। शैक्षणिक कार्यक्रमों और गतिविधियों के समन्वय के लिए संकायाध्यक्ष (प्रभारी) जिम्मेदार है।

आईआईएमएएसआर की नीति मुख्य रूप से निदेशक और आंतरिक शासन टीम के इनपुट के साथ शासी मंडल बैठकों में तैयार की गई ऐसा प्रतीत होता है। इसके अलावा, शैक्षिक परिषद (एसी) प्रमुख शैक्षिक समन्वय और नीति तैयार करने वाली संस्था है, जो मंडल को सिफारिशें प्रस्तुत करती है। आईआईएमएएसआर द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कार्यक्रम के लिए एक ऐसी छह कार्यक्रम समितियां (एमबीए, एमबीए (बिजनेस एनालिटिक्स (बीए)), एमबीए (मानव संसाधन (एचआर)), कार्यकारी एमबीए (ईएमबीए), डॉक्टरेट कार्यक्रम और कार्यकारी शिक्षा) भी हैं तथा कई गतिविधि समितियाँ (जैसे, पुस्तकालय एवं अनुसंधान समिति, जो संकाय अनुसंधान संबन्धित है; प्रवेश समिति, जो विभिन्न कार्यक्रमों के लिए प्रवेश प्रक्रिया से संबन्धित है, रोजगार (प्लेसमेंट) समिति, छात्र मामलों की समिति, जो छात्र के लिए जिम्मेदार है कल्याण और गतिविधियों, आदि) शामिल है।

संस्थान ने शिक्षा मंत्रालय के साथ एक वार्षिक समझौता ज्ञापन किया है, जिसमें ध्येय, लक्ष्य और उद्देश्य; स्वायत्तता का अभ्यास और वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन; प्रदर्शन मूल्यांकन निकष और लक्ष्य; सरकार से सुविधा / सहायता; और कार्यान्वयन के लिए कार्य योजना और समझौता ज्ञापन की निगरानी जैसे पांच व्यापक क्षेत्रों को रेखांकित किया गया। विशेष भार और नकारात्मक अंकन प्रावधान के साथ सात आयाम और 19 प्रदर्शन मूल्यांकन निकष है। संस्थान की रेटिंग उत्कृष्ट, बहुत अच्छा, अच्छा, उचित और निकृष्ट के रूप में समेकित प्राप्तांक पर आधारित होगी।

संस्थान का प्रदर्शन यह शिक्षा मंत्रालय और संस्थान के बीच एक संयुक्त अभ्यास होगा, और परिणामों की समीक्षा मंडल द्वारा की जाएगी है। निदेशक के मूल्यांकन के लिए एक रूपरेखा भी उपस्थित है। यह आठ आयामों और 30 मापदंडों पर आधारित है। ईआरसी को लगता है कि मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में निदेशक के प्रदर्शन का मूल्यांकन एमओयू के अनुरूप होना चाहिए। मंडल द्वारा इस रूपरेखा की नियमित रूप से समीक्षा की जानी चाहिए।

मंडल का गठन अभी पूर्ण नहीं हुआ है, और उसके लिए दो और पदों को भरने की आवश्यकता है। ईआरसी को लगता है कि संस्थान को इस अवसर का उपयोग करना चाहिए और मंडल को विदेशों के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों या उद्योग जगत के नेताओं के साथ एक अधिक अंतरराष्ट्रीय आकार देना चाहिए। इससे भविष्य में संस्थान की अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग और मान्यता में सहायता मिलेगी।

अंत में, राष्ट्रीय महत्व के एक शैक्षिक संस्थान के लिए संस्कृति स्थापित करना महत्वपूर्ण है। आईआईएमएएसआर यह सात वर्ष पुराना संस्थान है, जिसमें अधिकांश वर्तमान संकाय सदस्य नए

पीएचडी हैं, जिनके पास संस्थान निर्माण का बहुत कम या कोई अनुभव नहीं है। यह भी स्वाभाविक है कि अपनी वर्तमान स्थिति में निदेशक या संकायाध्यक्ष अधिकांश व्यवस्था को चलाएंगे। इस व्यवस्था के अपने फायदे और नुकसान हैं। जबकि शीर्ष नेतृत्व द्वारा कल्पना की गई अधिकांश पहलों को लागू किया जाएगा, तब संकाय निकाय की भागीदारी के लिए हमेशा आश्वस्त नहीं हो सकते है, और समय के साथ यह समस्या बढ़ सकती है। इस संबंध में संकाय स्वामित्व बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने हैं, उदाहरण के लिए, वितरित नेतृत्व के लिए कुछ वरिष्ठ संकाय को नियुक्त करना, भविष्य की गतिविधियों पर चर्चा करने और सामूहिक रूप से निर्णय लेने के लिए आवधिक दृष्टि अभ्यास आयोजित करना आदि, शामिल है।

भाग -3: शिक्षाक्रम

आईआईएमएएसआर की शुरुआत 2015 में 44 छात्रों के साथ दो वर्षीय पीजीपी (पीजिडिएम प्रदान करने वाले) शिक्षाक्रम के साथ हुई थी। प्रवेशीत छात्रों की संख्या प्रत्येक वर्ष बढ़कर 104 (2016 - दो विभाग), 95 (2017), 106 (2018), 146 (2019), 212 (2020 - तीन विभाग) और 233 (2021) हो गई। आईआईएम अधिनियम लागू होने के बाद एमबीए को लागू किया गया था। यह कार्यक्रम अच्छे गुणवत्ता वाले छात्रों के साथ दृढ़ हो गया है। वर्तमान छात्र और पूर्व छात्र प्रगति से संतुष्ट हैं। जबकि रोजगार अनुपात में सुधार हुआ है, इसमें और सुधार करने की आवश्यकता है।

वर्ष 2021 में, तीन और एमबीए कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। ये एमबीए (बीए), एमबीए (एचआर) और एक ईएमबीए हैं। इनमें क्रमशः 40, 40 और एक खुली संख्या के अपेक्षित बैच आकार के विरुद्ध 24, 13 और 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इन कार्यक्रमों की निरंतरता को अच्छेसे जांचे जाने की आवश्यकता है। यह तथ्य है कि एमबीए (एचआर) ने कुछ ही छात्रों को आकर्षित किया है, यह दर्शाता है कि रोजगार जगत मे इसकी मांग नहीं है, या आईआईएमएएसआर द्वारा अपर्याप्त विपणन प्रयास किए गये। इन कार्यक्रमों के लिए रोजगार (जॉइनिंग टू ऑफर) अनुपात बहुत कम है। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि शायद ही किसी सामान्य श्रेणी के छात्रों ने इस विशेषज्ञता को चुना हो। जबकि व्यवसाय जगत बहुत बड़ा है, एमबीए (बीए) के लिए भी स्थिरता का प्रश्न है, क्योंकि अन्य संस्थानों के अलावा विभिन्न आईआईएम, आईआईटी और आईआईआईटी द्वारा ऐसे कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। हम संदेह का जरूर लाभ भी दे सकते हैं, क्योंकि यह इन कार्यक्रमों के शुभारंभ का पहला ही वर्ष है।

यह एमबीए बनाम विकासशील विशेषज्ञताओं में सामान्य प्रबंध की प्रस्तुत पर ध्यान केंद्रित करने का प्रश्न उठाता है। क्या आईआईएमएएसआर की स्थिति में विशिष्टता के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता है? क्या विशेषज्ञताओं (जैसे कि जिन्हें हमने चुना है - एचआर और बीए, या कृषि, स्वास्थ्य देखभाल या यहां तक कि फार्मास्युटिकल आदि जैसी क्षेत्रीय संभावनाएं) को कार्यात्मक होना चाहिए। यदि हां, तो वह प्रक्रिया क्या है जिसके द्वारा विशेषज्ञताओं का चयन किया जाता है? नि:संदेह, आईआईएमएएसआर यह अभिनव संस्थान होना चाहिए, लेकिन यह देखना महत्वपूर्ण है कि पहले के आईआईएम संस्थानोंने विशेषज्ञताओं की प्रस्तुति में बहुत सतर्क रहे हैं, और मांग और उत्पाद डिजाइन पर अधिक अभ्यास किया है।

ईएमबीए भी वर्ष 2021 में शुरू किया गया था। प्रथम वर्ष के बैच के लिए चौंतीस छात्रों का प्रवेश यह उचित प्रतीत होते हैं, हालांकि कार्यक्रम को बनाए रखने के लिए फिर से सावधानीपूर्वक इसके विपणनपर विचार करना आवश्यक होगा। यह महत्वपूर्ण है कि मात्र 102 के आवेदनों से 79 ऑफर दिए गए थे। इसके अलावा, प्रवेश के लिए सीएटी परीक्षा से प्रस्तुत किए गए 52 में से 13 (25%) प्रवेशित हुए,

जबकि आईआईएमएएसआर के स्वयं के परीक्षण से प्रस्तावित 27 में से, जिसे आईआईएम अमृतसर प्रवेश परीक्षा (आईएएटी) कहा जाता है, जिससे 21 (78%) प्रवेशित हुए। गुणवत्ता के दृष्टिकोण से, कार्यक्रम के लिए कई और आवेदन सुनिश्चित करके चयनात्मकता बढ़ाना महत्वपूर्ण है। इस आधार पर कि सीएटी और आईएएटी दोनों माध्यमों ने तुलनीय गुणवत्ता के प्रतिभागियों को लाया है, आईएएटी के पास कार्यक्रम के लिए अधिक स्थिरता है। यह स्वाभाविक है, क्योंकि कई संस्थानों में सीएटी स्कोर स्वीकार्य हैं, और इसलिए अधिक गतिशीलता प्रदान करते हैं।

आईएएटी प्रक्रिया के माध्यम से प्रवेश पर अधिक ध्यान केंद्रित करना एक सराहनीय उपाय है। हालांकि, इसके बाद गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए। यह जहां भी परीक्षा आयोजित की जाती है, वहां विविधता को सीमित कर सकता है, लेकिन प्रमुख महानगर अभी भी आवश्यक विविधता को सक्षम कर सकते हैं। दूसरी ओर, भले ही प्रतिभागी पड़ोसी क्षेत्रों से अधिक हों, यह भी स्थानीय महत्व के लिए दिया जा सकता है, जो की आईआईएम स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

अधिक 'स्थिरता' प्राप्त करने के लिए, एमबीए विशेषज्ञताओं को प्रवेश पर एक ही विचार दिया जा सकता है। आईएएटी परीक्षा देने वाले आखिरकार एक और आईआईएम के बजाय आईआईएमएएसआर के बारे में गंभीरता से सोच रहे होंगे। यह एक मुद्दा है कि क्या 'केवल सीएटी' माध्यम के बिना गुणवत्ता या ब्रांड धारणा कम हो सकती है। आईआईएमएएसआर को इस पर ध्यान देने की जरूरत है कि भर्तीकर्ता इसे कैसे देखते हैं। यह ईएमबीए के लिए यह मुद्दा ही नहीं है, क्योंकि इसमे प्लेसमेंट प्रदान नहीं किया जाता। हालांकि, पुराने आईआईएम के ईएमबीए, पीएचडी और इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (आईपीएम) कार्यक्रमों में इस समस्या को दूर किया गया है। आईआईएमएएसआर में भी, प्रस्तावित आईपीएम एक विशिष्ट परीक्षा की समान नीति की योजना बना रहा है, भले ही वे अपने चौथे और पांचवें वर्ष में सीएटी मार्ग से आने वाले एमबीए में प्रवेशित हों।

पीएचडी कार्यक्रम वर्ष 2020 में शुरू किया गया था और अभी-अभी दूसरे बैच में प्रवेश लिए है। वर्ष 2020 में एक और वर्ष 2021 में पांच छात्र प्रवेशित हुए। छात्रों को पाठ्यक्रमों का एक समृद्ध सेट प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए दूसरे वर्ष में दो कार्यकाल के लिए आईआईएम बैंगलोर के साथ गठजोड़ किया गया है। हमे यह जानने मिला कि डॉक्टरेट छात्रों को तीन डॉक्टरेट संगोष्ठी की प्रस्तुती की जाएगी। यह आशा की जाती है कि भविष्य के वर्षों में और अधिक डॉक्टरेट पाठ्यक्रमों की प्रस्तुती की जाएगी। जबकि प्रारंभिक वर्षों के लिए आईआईएमबी गठजोड़ एक अच्छी पहल है, लंबे समय में, छात्रों को आईआईएमएएसआर पर आधारित होना चाहिए और अन्य आईआईएम में कुछ विशेष पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण करने का विकल्प दिया जा सकता है, ऑनलाइन विकल्प उपलब्ध होने चाहिए।

मूल प्रश्न यह है कि क्या पीएचडी कार्यक्रम केवल उन्हीं क्षेत्रों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए जहां हमारे पास योग्यता उपलब्धता है, अर्थात कम से कम चार शोध सक्रिय संकाय जो पीएचडी स्तर के पाठ्यक्रम

की प्रस्तुत कर सकते हैं और छात्रों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। आईआईएमएएसआर संकाय स्वामित्व के साथ एक गुणवत्ता कार्यक्रम बनाने के लिए यह एक बेहतर नीति हो सकती है। एक संबंधित मुद्दा यह है कि क्या पीएचडी कार्यक्रम पहले वर्ष में एमबीए के साथ काफी सामान्य होना चाहिए या विशिष्ट होना चाहिए। पुराने आईआईएम ने विशिष्ट होने का मार्ग अपनाया है, क्योंकि पीएचडी छात्रों को एमबीए की तुलना में एक अलग शिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता होती है। पीएचडी छात्र को एक क्षेत्र के रूप में प्रबंध के लिए आवश्यक अनुभव देने के लिए कुछ सामान्य पाठ्यक्रम पर्याप्त होने चाहिए। पोस्ट-डॉक्टोरल कार्यक्रम में संकाय योग्यता उपलब्धता का एक ही मुद्दा जारी है, खासकर यदि उनसे अनुसंधान और प्रकाशन पर संकाय के साथ काम करने की आशा की जाती है।

एक अन्य कार्यक्रम जिसे वर्ष 2022 में प्रस्तुत करने की योजना बनाई जा रही है, वह है पांच वर्षीय आईपीएम कार्यक्रम है। इसमें मात्रात्मक वित्त एवं अर्थशास्त्र में विशेषज्ञता होगी। विशेषज्ञता विशिष्टता प्रदान करती है और समकालीन होती है। स्नातक स्तर पर कई पाठ्यक्रमों की प्रस्तुती की आवश्यकता को देखते हुए, यह प्रश्न उठता है कि प्रारंभिक वर्षों में कौन अध्यापन करेंगे? यदि एक पारंपरिक विश्वविद्यालय से हैं, तो उन्हें बहुत अधिक शैक्षणिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता होगी। इस संदर्भ में, कार्यक्रम निदेशकों की भूमिका और प्रशासनिक सहायता बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

कई कार्यक्रमों को देखते हुए, कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम की प्रस्तुती के तालमेल का लाभ उठाना महत्वपूर्ण है। हम देखते हैं कि सामान्य प्रबंध में एमबीए के साथ-साथ एमबीए (बीए) और एमबीए (एचआर) प्रस्तुत किए गए है। विशेष रूप से ऐच्छिक के लिए, उपयुक्त शेड्यूलिंग द्वारा, जहां संभव हो, कार्यकारी एमबीए को भी इसी शृंखला में लाना उपयुक्त होगा। ईएमबीए और एमबीए प्रतिभागियों वाली ऐसी कक्षाओं में विविधता पुराने आईआईएम में अच्छी तरह से प्राप्त हुई है।

विश्लेषिकी में एक वर्षीय प्रमाणन कार्यक्रम यह एक और दीर्घ अवधि का कार्यक्रम शुरू होने वाला है। यह एक प्रारंभिक रोजगार कार्यक्रम के रूप में नए स्नातक पदवी धारकों पर लक्षित है और यह एक ऑनलाइन प्रस्तुत है। बाजार की प्रवृत्ति को देखते हुए, इस तरह के और अधिक ऑनलाइन कार्यक्रमों की प्रस्तुत करने के लिए जगह हो सकती है, यहां तक कि उनके शुरुआती करियर में कुछ अनुभव की भी आवश्यकता होती है। (यह कार्यकारी कार्यक्रम अनुभाग में ही जा रहा है)।

अन्य उच्च-गुणवत्ता वाले संस्थानों के सहयोग से कार्यक्रम करने की गुंजाइश है। उदाहरण के लिए, आईआईटी-रोपड़, एम्स-भटिंडा, राजीव गांधी विधि विश्वविद्यालय, पटियाला, आईआईएसईआर-मोहाली, एनआईपीईआर-मोहाली, एनआईटी-जालंधर के साथ।

अंतर्निहित गुणवत्ता और विशिष्टता का प्रश्न है: क्या हम सहक्रियात्मक तरीके से कार्यक्रमों की प्रस्तुत कर रहे हैं या क्या हम अपने योग्यता उपलब्धता को बहुत जल्द बढ़ा रहे हैं? हम अधिक परिणाम

प्राप्त करने के लिए सहयोग का लाभ कैसे उठाते हैं? एक संबंधित प्रश्न यह है कि क्या हमें अधिक कार्यक्रमों की प्रस्तुती करनी चाहिए या स्थापित कार्यक्रमों में अधिक अनुभाग जोड़ना चाहिए?

भाग -4: छात्र

समिति को लगा कि सीएटी स्कोर और प्रतिस्पर्धी माहौल के आधार पर छात्रों की गुणवत्ता अच्छी है। भूगोल की दृष्टि से विविधता बढ़ रही थी। अनुभव प्रोफाइल ने उचित विविधता प्रदर्शित की। लिंग और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में विविधता विषम थी। बेहतर संतुलन प्राप्त करने के लिए इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सामाजिक विविधता सरकारी नियमों को ध्यान में रखते हुए थी। आईपीएम शुरू होने के साथ, तीन वर्षों में, अकादमिक पृष्ठभूमि में एमबीए की विविधता स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी क्योंकि आईपीएम छात्र एमबीए में शामिल हो जाते हैं। अन्य संस्थानों के साथ साझेदारी में कार्यक्रम करने की संभावना का लाभ उठाने से भी कार्यक्रमों में और निश्चित रूप से परिसर में विविधता आ सकती है।

प्रस्ताव देने और उचित गुणवत्ता वाला बैच प्राप्त करने के लिए कई छात्रों (प्रस्तावों का लगभग दस गुना) का साक्षात्कार करने की चुनौती थी। यह चुनौती बनी रहेगी, एक नया आईआईएम होने के नाते, और सीएटी स्कोर की गतिशीलता को देखते हुए। जबकि सीएटी को एक प्रवेश माध्यम के रूप में बनाए रखा जाना चाहिए, आईआईएमएएसआर को उन माध्यमों के बारे में सोचना चाहिए जो अधिक 'स्थिरता' प्रदान करेंगे। आईआईएमएएसआर और/या अन्य संयुक्त/एकीकृत कार्यक्रमों द्वारा आयोजित परीक्षा के माध्यम से प्रवेश पर विचार किया जाना चाहिए।

समिति ने आईआईएमएएसआर में अपने अनुभव पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में लगभग 50 छात्रों के नमूना आधार पर बातचीत की। उनका प्राथमिक जानकारी यह थी कि वे शैक्षिक, सह-पाठ्यचर्या और पाठ्येतर अनुभव से खुश थे। वे आवास और भोजन के लिए छात्रावास की गुणवत्ता से भी संतुष्ट थे। उनके आवास और परिसर में कक्षाओं के बीच की दूरी को देखते हुए, बस के लिए लगने वाले समय पर एकमात्र चिंता थी। द्वितीय वर्ष के छात्र विशेष रूप से प्रभावित हुए थे, जब उन दिनों कक्षाओं के बीच लंबा अंतराल था - या तो उन्हें एक अतिरिक्त यात्रा पर समय गंवाना पड़ता था या परिसर में रहना पड़ता था जहां वे इंटर-क्लास समय का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर सकते थे। आशंका जताई जा रही थी कि स्वयं के परिसर के निर्माण से ये समस्याएं खत्म हो जाएंगी।

इस शैक्षिक वर्ष के कई कार्यक्रमों को देखते हुए, उन्होंने महसूस किया कि इंटर-प्रोग्राम कनेक्शन कुछ सामान्य मूल और ऐच्छिक पाठ्यक्रमों दोनों के संदर्भ में एक अवसर होगा, जहां कार्यक्रमों में छात्र विविधता सीखने को बढ़ा सकती है। सह-पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों में समृद्ध सहभाग भी हो सकता है।

दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान पांच स्नातक बैच के 12 पूर्व छात्रों के साथ बातचीत हुई। वे खुश थे कि पहले बैच के बाद के वर्षों में छात्र अनुभव में सुधार हो रहा था। सिस्टम और प्रक्रियाएं, विशेष रूप

से प्लेसमेंट में, पूर्णकालिक निदेशक के आने के साथ एक अतिरिक्त बढ़ावे के साथ ऊपर उठी थीं। रोजगार (प्लेसमेंट) के अवसर वर्षों से बढ़ रहे थे। ऐसे भी उद्योग समूह थे जो भर्ती प्रक्रिया और भर्तियों से खुश होने के कारण हर वर्ष आने का निर्णय किया था। इस वर्ष, 2022 स्नातक बैच के लिए स्थायी प्लेसमेंट, और 2023 स्नातक बैच के लिए ग्रीष्मकालीन प्लेसमेंट सामान्य रूप से अर्थव्यवस्था में तेजी से था। आईआईएमएएसआर ने इस प्रथा को बनाए रखा है।

"बुद्धि और सत्यनिष्ठा के साथ विकासशील नेताओं" के हमारे दृष्टिकोण के संदर्भ में छात्रों के वास्तविक परिवर्तन को समझने के लिए, ऐसे निकष विकसित करना महत्वपूर्ण है जिनका मूल्यांकन स्नातक होने के तीन और / या पांच वर्षों बाद किया जा सकता है। इसे अतिशीघ्र लागू किया जाना चाहिए, खासकर जब से आईआईएमएएसआर को इस स्नातक प्रोफ़ाइल के साथ पूर्व छात्र मिले हैं। एक बार यह प्रणाली लागू हो जाने के बाद, पूर्व छात्रों की भागीदारी के साथ इसे बनाए रखना सरल होगा। इस तरह की व्यवस्था से अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भी मदद मिलेगी।

पूर्व छात्र, अपनी ओर से, नए बैच अभिविन्यास, वक्ता श्रृंखला, प्रमुख शहरों में मिलन समारोह, और यहां तक कि प्रवेश साक्षात्कार में भाग लेने जैसे कार्यक्रमों के लिए प्राथमिक संस्थान के साथ जुड़ने की आशा कर रहे थे।

भाग -5: संकाय एवं क्षेत्र प्रोफ़ाइल

31 दिसंबर, 2021 तक संस्थान में अट्ठाईस संकाय सदस्य हैं, जिनमें से लगभग आधे सदस्यों की भर्ती पिछले दो वर्षों में की गई है। हाल के दिनों में संख्या में इस प्रभावशाली वृद्धि ने संस्थान में शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए किए गए उपायों को बढ़ावा दिया है।

संस्थान के संकाय सदस्य निम्नलिखित आठ क्षेत्रों में से एक से संबंधित हैं।

क- संचार
ख- अर्थशास्त्र
ग- वित्त, लेखा एवं नियंत्रण
घ- सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटेशनल सिस्टम
ङ- विपणन
च- संगठनात्मक व्यवहार एवं मानव संसाधन
छ- मात्रात्मक तरीके और संचालन प्रबंध
ज- नीतिक प्रबंध

संचार क्षेत्र, जिसमें दो संकाय सदस्य सहभागी हैं, ईएमबीए सहित सभी कार्यक्रमों में तीन मुख्य पाठ्यक्रम और दो वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इस क्षेत्र ने कुछ कार्यक्रमों के लिए विशिष्ट ऐच्छिक प्रस्तुत करने की योजना भी तैयार की है। पिछले तीन वर्षों में दस प्रकाशन प्रकाशित हुए हैं और पांच शोध विषय तैयार किए गए हैं। इनमें सार्वजनिक बोलने मे बेचैनी, आपात संचार, नीतिक संचार, वित्तीय और निवेशक संचार और कार्यरत लोगों के लिए मिश्रित अध्ययन शामिल हैं। इस क्षेत्र को लगता है कि सीमित संख्या में विशेष संचार ऐच्छिक हैं और लिखित संचार कार्यक्रमों में अकादमिक कठोरता को लागू करने के लिए शिक्षार्थियों का झुकाव कम है। हालांकि सदस्यों ने दो तीन दिवसीय प्रबंध विकास कार्यक्रमों की प्रस्तुती की है, उनका मानना है कि मुक्त एमडीपी को निर्माण करने और बढ़ावा देने में सीमित संस्थागत अनुभव है।

तीन संकाय सदस्यों वाले अर्थशास्त्र विभागने पिछले तीन वर्षों में सात प्रकाशन हैं। एमबीए में दो मुख्य पाठ्यक्रम और दो ऐच्छिक के अलावा कार्यकारी शिक्षा और एमडीपी में तीन पाठ्यक्रम वर्तमान में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। शैक्षिक प्रशासन में योगदान के अलावा, सदस्यों द्वारा छह नए ऐच्छिक प्रस्तुति करने के प्रयास किए गए। कुछ चुनौतियों, जैसा कि सदस्यों द्वारा माना जाता है, में कार्यक्रम की संरचना करना और कार्यक्रम में छात्रों के सही प्रोफाइल को स्वीकार करना शामिल है। जैसे-जैसे संस्थान नए कार्यक्रमों की शुरुआत करता है, वैसे-वैसे संकाय सदस्यों की संख्या बढ़ाने के अलावा छात्रों के लिए उद्योग जगत में और अधिक संपर्क बढ़ाने की आवश्यकता है।

वित्त, लेखा और नियंत्रण विभाग, जिसमें पांच सदस्य हैं, उन्होने नौ शोध पत्र, इसके अलावा वित्तीय समाचार पत्रों में लेख, पुस्तक समीक्षा और सम्मेलन पत्र प्रकाशित हैं। इन संकाय द्वारा एमबीए, एमबीए-बीए और एमबीए-एचआर कार्यक्रमों में आगंतुक संकाय के साथ चार मुख्य पाठ्यक्रम और ग्यारह वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इस विभाग में निर्धारण वर्ष 2022-23 से ऐच्छिक की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव है। संस्थान ने सीएफए संस्थान के साथ वित्त और लेखा पाठ्यक्रम को संरेखित किया है, जो आईआईएम अमृतसर में पाठ्यक्रम के 75% से अधिक पाठ्यक्रम सीएफए कार्यक्रम से मेल खाता है।

दो संकाय सदस्यों वाले आईटी और कम्प्यूटेशनल सिस्टम क्षेत्र ने पिछले तीन वर्षों में पांच पेपर प्रकाशित किए हैं। इस विभाग ने एमबीए-बीए कार्यक्रम के इनपुट पर विविधता की पहचान छात्रों में कौशल की सीमा को देखते हुए एक चुनौती के रूप में की है। इस मुद्दे को हल करने के विकल्पों में से एक के रूप में प्रारंभिक पाठ्यक्रमों की परिकल्पना की जा रही है।

विपणन विभाग में चार संकाय सदस्य हैं, जो एमबीए, एमबीए (एचआर) और एमबीए (विश्लेषकी) में अध्यापन करते हैं। पिछले तीन वर्षों में इन सदस्यों द्वारा कुल 26 लेख प्रकाशित किए गए हैं। विभाग उपरोक्त कार्यक्रमों में तीन मूल और चौदह ऐच्छिक विषय प्रदान करता है। जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा उनमें अनुसंधान के लिए प्रयोगशालाओं से संबंधित बुनियादी सुविधाओं की कमी और विषयगत अनुसंधान डोमेन के विकास में नवीनता शामिल है। नए पाठ्यक्रम विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई है और इस दिशा में एक कदम उठाया गया है।

पांच संकाय सदस्यों वाले संगठनात्मक व्यवहार और मानव संसाधन क्षेत्र ने अनुसंधान, शिक्षण, प्रशिक्षण, परामर्श और प्रभाव हस्तक्षेप के क्षेत्रों में व्यापक योगदान दिया है। एमबीए, एमबीए-एचआर, एमबीए-बीए और ईएमबीए के पहले वर्ष में ग्यारह पाठ्यक्रम और इन कार्यक्रमों में अठारह वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं। सदस्यों के अनुसंधान हित चौदह विषयों में हैं। इनमें से कुछ में नेतृत्व, प्रतिभा प्रबंधन, परिवर्तन प्रबंधन, मानव संसाधन विश्लेषण आदि शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में इन संकाय सदस्यों की शोध गतिविधियों के तहत ग्यारह प्रकाशन, एक पुस्तक अध्याय और चार सम्मेलन पत्र रिपोर्ट किए गए हैं। सदस्यों द्वारा उठाई गई कुछ चिंताओं में एमबीए एचआर कार्यक्रम के लिए सहयोगी अनुसंधान में सहभागी होने के अलावा, उपयुक्त संसाधन व्यक्तियों को खोजने की चुनौती, शिक्षण और कार्यभार मानदंडों को पूरा करने के बीच संतुलन, लंबे समय तक अकादमिक कार्यक्रमों को बनाए रखने की व्यवहार्यता, लगातार शैक्षणिक सहायता और समर्थन की कमी शामिल है।

पांच संकाय सदस्योंके साथ मात्रात्मक तरीके और संचालन प्रबंध क्षेत्र ने चौदह पत्रिका प्रकाशनों, आठ सम्मेलन पत्रों और एक पुस्तक अध्याय में योगदान दिया है। सदस्य एमबीए, और एमबीए-बीए कार्यक्रमों में शिक्षण में सक्रिय हैं। वे वर्तमान शैक्षणिक वर्ष में अतिरिक्त तीन ऐच्छिक प्रस्तुत करने के प्रस्ताव

के साथ आठ मुख्य पाठ्यक्रम और नौ ऐच्छिक प्रस्तुत करने में शामिल हैं। कुछ अवसरों की पहचाने गए: अधिकारियों के लिए अनुकूलित कार्यक्रम प्रदान करना, युवा व्यावसायिकों के लिए विश्लेषिकी कार्यक्रम विकसित करना, डिजिटल परिवर्तन के साथ उच्च तालमेल, उद्योग 4.0 और एआई अनुप्रयोग, राज्य और इसके आसपास के एसएमई को परामर्श सहायता प्रदान करना, और क्षेत्र की कृषि-अर्थव्यवस्था की अनूठी विशेषताओं को समझना आदि शामिल है। चुनौतियों में पर्याप्त शैक्षणिक सहायक कर्मचारियों की कमी और मुख्य संचालन से लेकर आईटी और विश्लेषकी तक व्यावसायिक प्रक्रियाओं को कैसे शामिल किया जाए, इस पर विचार करना है।

पिछले तीन वर्षों में एक सदस्य वाले सामरिक प्रबंध विभाग में एक शोध प्रकाशन है। प्रस्तुत मुख्य पाठ्यक्रमों में छह ऐच्छिक के अलावा नियमित पूर्णकालिक शैक्षणिक कार्यक्रम में से एक और कार्यकारी एमबीए में दो शामिल हैं।

विभिन्न क्षेत्रों/विभागों में संकाय सदस्यों के साथ बातचीत के आधार पर, यह स्पष्ट था कि समग्र रूप से संकाय यह शिक्षण, अनुसंधान और प्रशासनिक गतिविधियों को कंधे से कंधा मिलाकर एक विकसनशील संस्थान की आवश्यकताओं के लिए साथ है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन गतिविधियों पर अपेक्षित ध्यान दिया गया है, इन तीन पहलुओं को एकीकृत करने वाले कार्यभार मानदंड तैयार किए गए हैं। आगे बढ़ते हुए संस्थान द्वारा शुरू की गई शिक्षण की प्राथमिक गतिविधि के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र में संकायों को जोड़ने की सटीक आवश्यकताओं का आकलन करने की आवश्यकता है। यह देखा गया है कि कार्यक्रमों में वृद्धि के साथ-साथ कार्यभार में विविधता ने प्राथमिक शिक्षण जिम्मेदारी को प्रभावित करना शुरू कर दिया है।

जबकि ओबी एंड एचआरएम विभाग में शिक्षण के मामले में अब तक का सबसे बड़ा कार्यभार है, इनमें से कुछ सदस्य अनुसंधान में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। पहले तीन वर्षों में मात्रात्मक वित्त और अर्थशास्त्र में बीएस पर ध्यान देने के साथ, इस क्षेत्र को प्रबंध में प्रस्तावित पांच वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम के साथ अर्थशास्त्र क्षेत्र में संकाय शक्ति बढ़ाने के लिए कुछ गुंजाइश प्रतीत होती है। संयोग से यह क्षेत्र प्रवेश से संबंधित प्रमुख शैक्षणिक प्रशासन के साथ भी निहित है। कार्यक्रम के पहले तीन वर्षों में विचार की गई संरचना की बारीकियों के आधार पर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान से संबंधित क्षेत्र की स्थापना पर विचार करने के अलावा वित्त, लेखा और नियंत्रण क्षेत्र में संकाय सदस्यों की वृद्धि के लिए सक्रिय रूप से योजना बनाई जा सकती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि अनुसंधान को प्रभावित नहीं करने वाली दिशाओं में सदस्यों द्वारा गतिविधियों की कुछ विषम एकाग्रता है। कुछ सदस्यों के अनुसंधान में कम उत्पादकता वाले अन्य संस्थागत गतिविधियों में योगदान देने के प्रारंभिक संकेत एक या दो क्षेत्रों में सामने आए। जब वह कार्यक्रमों के संयोजन को शुरू कर रहा हो तो संस्थान कुछ सावधानी या संयम बरतना चाहेगा। बहुत जल्दी कम होना लंबे समय में उल्टा भी हो सकता है। साथ ही, विविध श्रोताओं के प्रोफाइल वाले विभिन्न कार्यक्रमों

में अध्यापन चुनौतियों का अपनी प्रस्तुति कर सकता है और परिणामस्वरूप उत्साह में कमी आ सकती है और समरूप श्रोताओं के अतिरिक्त समूहों को अध्यापन की तुलना में कम उत्पादक हो सकता है। यह प्रश्न उठाता है कि क्या लंबी अवधि के प्रमाणन कार्यक्रमों सहित अधिक कार्यक्रमों में शामिल होने के बजाय लंबी अवधि के शैक्षणिक कार्यक्रमों में वर्गों को बढ़ाना सार्थक होगा। अनुसंधान और शिक्षण के आयामों के साथ गतिविधियों में किसी भी वृद्धि को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि युवा संकाय सदस्यों पर अधिक प्रशासनिक जिम्मेदारियों का बोझ न पड़े। यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रशासनिक सुविधा के लिए क्षेत्रों को जोड़ना ठीक हो सकता है, लेकिन उनमें से प्रत्येक के लिए पहचान को महत्व देना आवश्यक है।

कार्यभार के मुद्दों के बावजूद, संकाय सदस्यों को बहुत सकारात्मक रूप से आने के लिए बधाई दी जानी चाहिए, लेकिन प्रश्न यह है कि यह कब तक चल सकता है। कार्यभार के किसी भी संकेत को इस तरह से स्थानांतरित करने के लिए जो अनुसंधान पर प्रशासनिक गतिविधियों को थोड़ा अधिक महत्व देता है, एक संकाय सदस्य में पहचाना जाना चाहिए और संकाय सदस्य को प्रशासन से हटा दिया जाना चाहिए और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संकाय सदस्यों की भर्ती के लिए एक समिति प्रक्रिया प्रचलित है, और ये समितियां प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशिष्ट हैं। संकाय से संबंधित कुछ पहलुओं को एक स्थायी संकाय विकास और मूल्यांकन समिति (एफडीईसी) का गठन करके और वरिष्ठ स्तर पर प्रोफेसरों की नियुक्ति करके दीर्घकालिक आधार पर संबोधित और सुव्यवस्थित किया जा सकता है। एफडीईसी शुरू करने के लिए अन्य आईआईएम के कुछ वरिष्ठ संकाय सदस्यों का गठन कर सकता है और सभी क्षेत्रों के संकाय सदस्यों के विचारों पर विचार किया जा सकता है और उन्हें पदोन्नति और भर्ती अभ्यास में शामिल किया जा सकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रस्ताव को अत्यधिक लोकतांत्रिक बनाने के बजाय प्रस्ताव तैयार करते समय संकाय की परिपक्वता को ध्यान में रखा जाना चाहिए। संस्थान ने कम विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों से संकाय सदस्यों की भर्ती के लिए सक्रिय रूप से गंभीर प्रयास शुरू किए हैं, जिससे विविधता लाने के लिए इसकी चिंता को दर्शाया गया है।

भाग -6: अनुसंधान एवं केंद्र

पिछले तीन वर्षों में अनुसंधान उत्पादकता के अवलोकन से, प्रकाशन के संदर्भ में उत्पादन को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहला डॉक्टरेट कार्य और परिणामी प्रकाशनों से संबंधित है जो एक संकाय सदस्य के कार्यकाल के दौरान आईआईएम अमृतसर के साथ अपने जुड़ाव से पहले एक शोधकर्ता के रूप में सामने आया। दूसरा यह नेटवर्क से संबंधित है जो सम्मेलनों में शोधपत्र प्रस्तुत करने से उत्पन्न हुए हैं। एक क्षेत्र/विभाग में या दो या दो से अधिक क्षेत्रों/विभागों से आपसी हित के विषयों पर काम करने के लिए एक साथ आने वाले संकाय सदस्यों के एक समूह से तीसरी श्रुखला है।

सभी क्षेत्रों/विभागों में संकाय के प्रोफाइल को देखते हुए, अधिकांश काम पहली श्रेणी से प्रतीत होता है। यह समझ में आता है क्योंकि अधिकांश संकाय सदस्य डॉक्टरेट कार्यक्रमों से हाल ही में उत्तीर्ण हुए हैं। चूंकि जो भी आउटपुट आता है उसकी आयु भी होती है जो जल्दी से समाप्त हो सकती है, और दूसरी श्रेणी के उदाहरण आम तौर पर प्रारंभिक चरणों में अस्थिर होते हैं, खासकर जब तक कि कहीं और स्थित सह-लेखकों के साथ तालमेल नहीं बनाया जाता है, इसलिए अनुसंधान की तीसरी श्रेणी को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान के लिए उपयोगी होगा। यह कई मायनों में उपयुक्त होगा। सबसे पहले, वर्तमान में संकाय में मौजूद बंधन को मजबूत किया जाएगा। दूसरे, यह संस्थान में किए गए शिक्षण गतिविधियों को पूरा करने में संकाय सदस्य की मदद करेगा, ताकि समूह के अन्य सदस्यों को आंतरिक रूप से मौजूद संसाधन क्षमताओं को समझने और उसे मजबूत करने में सक्षम बनाया जा सके। इस अभ्यास का तीसरा अपेक्षित परिणाम इस तथ्य का संज्ञान लेना है कि प्रत्येक क्षेत्र में संख्या की वृद्धि के साथ, विशेष रूप से सहयोग करने की आवश्यकता है जब उभरते प्रबंध मुद्दों में समाधान या दृष्टिकोण में पूरकता का अनुभव होता है। एक विशेष प्रकार के शोध को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के इरादे को इंगित करने के लिए कार्यभार बिंदुओं की गणना में इस दर्शन को शामिल करने पर विचार करना उचित होगा। उदाहरण के लिए, संस्थान द्वारा किए गए एसआईपी तीसरी तरह की शोध गतिविधि के लिए उत्तरदायी हैं।

इस दृष्टिकोण को अपनाने का एक अपेक्षित परिणाम परामर्श के अवसरों और प्रकरण लेखन को निर्माण कर सकता है। राज्य सरकार और स्थानीय एजेंसियों की अनुमति से संस्थान द्वारा किए गए एसआईपी से मामलों की एक कड़ी विकासित होगी। इनसे संस्थान के लिए कुछ राजस्व लाने, उद्योग के लिए संकाय के लिए अधिक संपर्क प्रदान करने की संभावना है। इन प्रकरणों को संपादित करने और प्रकाशित करने के लिए संस्थान में अनुसंधान को मजबूत करने के लिए एक कठोर प्रक्रिया लागू की जा सकती है। इनके अनुसरण में एक व्यवस्थित दृष्टिकोण ऐसे केंद्रों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करेगा जो स्थायी और संकाय सदस्यों द्वारा संचालित होंगे। संचार विभाग में वित्त से संबंधित विषयों और विपणन

से संबंधित विषयों पर काम करने वाले संकाय सदस्यों का भी उल्लेख था। सहयोग का प्रारंभिक संच इन तीन क्षेत्रों के सदस्यों को एक केंद्र के भागों के रूप में ला सकता है जो वित्त और विपणन व्यावसायिक की संचार आवश्यकताओं और संगठनों में इन दो विषयों के बीच एक बातचीत को संबोधित करता है।

शासी मंडल द्वारा अनुमोदित जनादेश के भाग के रूप में, संस्थान में एक नवाचार नीति, उद्भवन (इन्क्यूबेशन) केंद्र और उद्यमिता केंद्र है। संबंधित अभ्यास के रूप में, स्थानीय उद्योग के सामने आने वाले मुद्दों, गले लगाने की उनकी उत्सुकता को समझने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक डोमेन (जैसे ओबी एंड एचआर, मात्रात्मक तरीके और संचालन प्रबंधन, और आईटी और कम्प्यूटेशनल कौशल) से संकाय लाना एक अच्छा विचार होगा। बातचीत के दौरान यह देखा गया कि कुछ संकाय सदस्यों ने कुछ विसंगतियों या उनकी यह समझने में असमर्थता देखी कि निहित लाभों के बावजूद कुछ क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का उपयोग क्यों नहीं किया जा रहा था। इस तरह का एक मंच बनाने से संकाय न केवल जमीनी हकीकत को समझ सकेंगे बल्कि इन सीखों को वापस कक्षा में स्थानांतरित भी कर सकेंगे। अन्य दीर्घकालिक परिणाम इन केंद्रों से शैक्षणिक कार्यक्रमों की शुरूआत होंगे जो इस तरह के कार्यक्रमों की प्रस्तुति से पहले हुई आधारभूत कार्य के कारण अधिक व्यवहार्य हो सकते हैं। कार्यान्वयन के लिए केंद्रों की पहचान और विकास की प्रक्रिया पर सक्रिय रूप से विचार करने की आवश्यकता है।

वर्तमान में, पीएचडी पाठ्यक्रम का दूसरा वर्ष आईआईएम बैंगलोर में किया जा रहा है। उस छात्र के साथ बातचीत के आधार पर जो वर्तमान में उस संस्थान में कार्यक्रम कर रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि आईआईएम अमृतसर में प्रथम वर्ष में पर्याप्त और अपेक्षित अध्ययन कार्य नहीं किया गया था ताकि आईआईएम बैंगलोर में दूसरे वर्ष में इनपुट प्राप्त करने के लिए तैयार किया जा सके। इसलिए चुनौती यह है कि अनुकूलता सुनिश्चित करने के लिए शुरू में प्रस्तुत किए गए पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाए। कार्यक्रम के शुरू होने से पहले प्रत्येक चरण में प्रक्रियाओं और अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से रेखांकित करने वाली एक मैनुअल रखने की आवश्यकता व्यक्त की गई है। छात्रों के पहले बैच के अनुभव के आधार पर, पीएचडी के प्रत्येक शिक्षा माध्यम पर अपेक्षित प्रावधान करने के लिए उपायों को अपनाने की आवश्यकता है।

वर्ष 2021 में शुरू किए गए पोस्ट-डॉक्टरल कार्यक्रम ने मई 2021 और अगस्त 2021 में किए गए प्रवेश के दो दौरों में तीन विभागों के तीन विद्वानों को आकर्षित किया है। यद्यपि तैयार किए गए मानदंड अपेक्षित आवश्यकताओं को निर्धारित करते हैं, कार्यक्रम के व्यापक दर्शन के बारे में कि यह कैसे अपने शोध को शुरू करने में संकाय की भूमिका को बढ़ाएगा और व्यवहार्यता में योगदान देगा, इसे स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है। इस तथ्य के बावजूद कि अपेक्षित शोध परिणाम को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है, पोस्ट-डॉक्टोरल फेलो द्वारा संस्था के साथ सहयोग पूरा करने के

बाद की सटीक अपेक्षा स्पष्ट नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, इस गतिविधि के लिए किए गए प्रयासों को किए गए प्रयासों के अपव्यय के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि इनपुट बढ़ाने और नियमित डॉक्टरेट कार्यक्रम को मजबूत करने के लिए समान प्रयास शुरू किए जा सकते हैं।

भाग -7: कार्यकारी शिक्षा एवं उद्योग संपर्क

कार्यकारी शिक्षा के क्षेत्र अपनी पहचान बनाने हेतु एक कार्यकारी एमबीए शुरू करने का संस्थान का निर्णय उल्लेखनीय है। जबकि एक मानकीकृत परीक्षा (सीएटी) से प्राप्तांकों को स्वीकार करने के मामले में इसे अन्य तीन पूर्णकालिक कार्यक्रमों के बराबर बनाने के लिए प्रवेश को सुव्यवस्थित करने का प्रयास सरहनीय है, तथ्य यह है कि इस कार्यक्रम में प्रवेश का एक प्रमुख अनुपात उनके से है स्वयं का परीक्षण उल्लेखनीय है। यह अन्य स्थापित आईआईएम द्वारा अपनाए गए तरीके के अनुरूप है। जब तक प्रवेश निकष छात्रों को संकेत देते हैं कि उनका प्रवेश एक प्रक्रिया के माध्यम से हुआ हैं, किसी भी मार्ग जो उपयुक्त माना जाए उसे लागू किया जा सकता है, और छात्रों को यह बताया जा सकता है कि उन्होंने एक कार्यक्रम में अपना प्रवेश कर लिया है, प्रचलन में हाल की प्रथाओं के लिए जिसमें प्रवेश मानदंड को कम करने का प्रयास किया गया है, उस कारण से इसका विरोध किया गया है।

आईआईएमएएसआर को कंपनी के कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रमों में मुख्य रूप से पेट्रोलियम क्षेत्र में पेशकश करने का अवसर मिला है। इस अनुभव को देखते हुए पंजाब और क्षेत्र के उद्योगों के लिए और अधिक अवसर होंगे। संकाय अपने शोध और केस राइटिंग को चैनलाइज करने में भी सक्षम होंने के कारण खुले नामांकन कार्यक्रमों पर भी विचार किया जाना चाहिए।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि संस्थान द्वारा होटलों में बोर्डिंग, लॉजिंग और कक्षाओं के आयोजन के लिए आवश्यक सुविधाओं के साथ लगभग सभी इन-कंपनी और अन्य कार्यकारी कार्यक्रम आयोजित किए गए थे, इसका लागत बढ़ने का एक निहितार्थ है और इसके परिणामस्वरूप कुछ ग्राहकों को नुकसान हो सकता है। इसलिए कार्यक्रम आयोजित करने का यह तरीका व्यवहार्य और धारणीय प्रस्ताव नहीं हो सकता है। यदि परिसर में आवास और कक्षाओं की योजना बनाई जा सकती है, तो स्थायी परिसर के निर्माण से इनमें से कुछ चिंताओं को कम करने की अपेक्षा है।

प्रमाणन कार्यक्रमों में विस्तार कुछ ऐसा है जो विचार करने योग्य है। जिस कार्यक्रम पर विचार किया जा रहा है (डेटा विश्लेषिकी में प्रमाणन कार्यक्रम) वर्तमान एमबीए-बीए को रद्द नहीं कर सकता है; हालाँकि, भविष्य में छात्रों की ओर से दो कार्यक्रमों में से एक पर विचार करने की प्रवृत्ति हो सकती है, अगर बाजार की स्थिति (रोजगार के अवसर) बहुत अच्छी नहीं हैं। प्रमाणपत्र कार्यक्रमों पर विचार करने यह अन्य क्षेत्रोंपर विचार करने से निश्चित ही योग्य है। इसके अलावा, इन प्रमाणपत्र कार्यक्रमों में से कुछ के माध्यम से स्थानीय एसएमई के बढ़ने की क्षमता पर टैप करने की आवश्यकता दो घटकों - कार्यक्रम और उद्योग-संस्थान संपर्क इनके के विकास को सक्षम करेगी।

राज्य में स्थित राष्ट्रीय महत्व के अन्य संस्थानों के साथ गठजोड़ कर सहयोगी कार्यक्रम शुरू करने की संभावना है। इनमें आईआईटी रोपड़, एम्स भटिंडा, राजीव गांधी विधी विश्वविद्यालय पटियाला, आईआईएसईआर मोहाली, एनआईपीईआर मोहाली और एनआईटी जालंधर शामिल हैं। इनमें से कुछ संस्थानों के साथ अल्पकालिक कार्यकारी कार्यक्रम राज्य भर में स्थित लघु उद्योग और कृषि-व्यवसाय फर्मों के साथ सहयोग की संभावना को खोलेंगे।

भाग -8: वित्त एवं प्रशासन

संस्थान वर्तमान में आंशिक वार्षिक आवर्ती व्यय और पूंजी विस्तार लागत के साथ शिक्षा मंत्रालय द्वारा समर्थित है। शिक्षा मंत्रालय से वार्षिक बजट के हेतु, वर्ष 2022-23 तक, प्रति छात्र प्रति छात्र 5 लाख रुपये, समग्र सहायता के रूप में 90 करोड़ रुपये की सीमा के साथ है। पूंजी विस्तार के लिए सहायता (अस्थायी परिसर के साथ-साथ आगामी स्थायी परिसर में) एचईएफए ऋण के माध्यम से सुरक्षित 350 करोड़ रुपये की राशि है, जिसमें से 87.5% पूंजी अनुदान के रूप में शिक्षा मंत्रालय द्वारा वहन किया जाएगा, और शेष 12.5 % का भुगतान संस्थान को करना होगा। कार्यक्रम शुल्क, कार्यकारी शिक्षा, और कॉर्पस फंड से ब्याज संस्थान के लिए राजस्व के प्राथमिक स्रोत हैं। अभी तक, संस्थान के पास अपनी परिचालन और पूंजीगत व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक वित्तीय शक्ति है। हालाँकि, वर्ष 2022-23 तक मंत्रालय से वार्षिक सहायता बंद होने के बाद स्थिति जल्द ही बदल जाएगी। इसके साथ ही अगले वर्ष से देय होने वाले एचईएफए ऋण के लिए लगभग 9 करोड़ रुपये प्रति वर्ष के ब्याज और मूलधन की अदायगी और वित्तीय स्थिरता को बहुत बारीकी से देखना होगा।

मंडल स्तर की वित्त उप-समिति है जो संस्थान की वित्तीय और संसाधन योजना को देखती है, जो एक अल्पकालिक वार्षिक बजट अभ्यास और एक व्यापक नीतिक ढांचे द्वारा निर्देशित होती है जो उन गतिविधियों के लिए खाते का प्रयास करती है जिन्हें लंबे समय तक किया जाना है। इसलिए संस्थान की निवेश योजना में नई पहल करने और चल रहे कार्यक्रम विस्तार आवश्यकताओं को पूरा करने के विकल्प दोनों को ध्यान में रखना है। संस्थान के शासी मंडल के पास पूंजी निवेश और परिचालन व्यय दोनों के लिए निधियों का अनुमोदन और प्रत्यक्ष उपयोग करने का अधिकार है।

प्रदर्श-3 में वर्ष 2018-19 से 2020-21 तक के वित्तीय आंकड़े और वर्ष 2021-22 के अनुमान दिए गए हैं।

स्पष्ट रूप से, संस्थान के वित्तीय स्वास्थ्य पर ध्यान देना यह समय की मांग है, जिसमें स्थिरता के मुद्दे पर कुछ ध्यान रखना भी शामिल है। यह स्थिति वर्तमान में एक स्वस्थ कोष के साथ ज्यादा चिंता का विषय नहीं हो सकता है, लेकिन शिक्षा मंत्रालय वार्षिक सहायता जल्द ही शून्य हो रहा है, और एचईएफए ऋण के लिए लगभग 9 करोड़ रुपये की अतिरिक्त वार्षिक देनदारियों के साथ, संस्थान को जल्द ही अतिरिक्त राजस्व स्रोत खोजने होंगे। हो सकता है कि कुल वार्षिक शुल्क बढ़ाने की कोई गुंजाइश न हो क्योंकि वे पहले से ही प्लेसमेंट के दौरान दिए जाने वाले औसत सीटीसी वेतन से मामूली अधिक हैं। अभी के कार्यक्रमों के लिए छात्रों की संख्या में वृद्धि, अधिक कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम और पांच वर्षीय एकीकृत आईपीएम स्थायी आधार पर राजस्व बढ़ाने के कुछ संभावित रास्ते हैं।

संस्थान के मार्ग में उपर्युक्त विस्तार के अवसर हैं। वर्तमान में संकाय का आकार 30 से कम है, और संकाय सदस्यों की संख्या में कुछ और जोड़ने की संभावनाएं हैं। हालाँकि, यह एक कैलिब्रेटेड तरीके से किया जाना है। कुछ अन्य वर्गों में, हमने केवल नए पीएचडी धारकों की नियुक्ती के संभावित नुकसान का संकेत दिया है। एक संकाय संचालित संस्थान में संक्रमण के लिए वितरित नेतृत्व संरचना को वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों और गतिविधियों के आलोक में विभिन्न शैक्षणिक समूहों के आवश्यकता विश्लेषण के आधार पर कुछ वरिष्ठ संकाय सदस्यों को जोड़ने की आवश्यकता होती है। इस अभ्यास को करते समय, डीन या एसोसिएट डीन के स्तर पर कुछ प्रमुख शैक्षणिक प्रशासनिक पदों को जोड़ने की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इसी तरह की टिप्पणी अधिकारियों और कर्मचारियों की आवश्यकता पर लागू होती है। शैक्षिक गतिविधियों में वृद्धि और वित्तीय व्यवहार्यता के अधीन संकाय संख्या में परिणामी वृद्धि के साथ, प्रबंधकीय और पर्यवेक्षी स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों में भी इसी वृद्धि की आवश्यकता होगी। ऐसा करते समय, उचित भूमिकाओं और पदों के बारे में ध्यान रखा जाना चाहिए जहाँ ऐसी नियुक्तियाँ होनी चाहिए। वित्त और लेखा अधिकारी का पद हाल ही में भरा गया है, और पदधारी के जल्द ही शामिल होने की संभावना है। यह क्षमता निर्माण और प्रेरणा दोनों के लिए अन्य आईआईएम में दौरे और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रायोजक कर्मचारियों की भी मदद करेगा। यह क्षमता निर्माण और प्रेरणा दोनों के लिए अन्य आईआईएम में दौरे और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रायोजक कर्मचारियों की भी मदद करेगा।

भाग -9: संरचना

जैसा कि पहले ही कहा गया है, आईआईएमएएसआर वर्तमान में पंजाब इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के बिल्डिंग के एक अस्थायी परिसर से चल रहा है। प्रशासनिक कार्यालय और कक्षाएँ यहाँ स्थित हैं, और आईआईएमएएसआर ने फर्नीचर, कंप्यूटिंग, आईटी और अन्य बुनियादी सुविधाओं के लिए आवश्यक व्यवस्था की है। निकट की एक इमारत में कुछ अतिरिक्त स्थान भी किराए पर लिए गए थे। छात्रों का छात्रावास भी वर्तमान में उचित सुविधाओं के साथ अस्थायी है। स्थायी परिसर राज्य सरकार द्वारा दी गई 61 एकड़ समतल भूमि पर बनाया जा रहा है। ईआरसी ने निर्माण स्थल का दौरा किया। निर्माण का पहला चरण पूरे जोरों पर है, और चालू वर्ष के अंत तक कब्जे के लिए तैयार होने की आशा है। निर्माण की निगरानी मंडल स्तरीय भवन समिति द्वारा की जा रही है।

स्थायी परिसर में गतिविधियों और सेवाओं के प्रशासनिक परिसर, शैक्षणिक परिसर, आवासीय परिसर और अन्य सुविधाएं इन चार प्रमुख समूहों को समायोजित करने की योजना है। परिसरों मे कम से कम पैदल चलने को सुनिश्चित करने के लिए एक कॉम्पैक्ट कॉन्फ़िगरेशन के साथ, परिसर मे अनेक बाह्य स्थान भी होंगे।

छात्रावास में विभिन्न कार्यक्रमों में 1170 छात्रों को प्रवेशित किया जाएगा, जिसमें कुछ विवाहित आवास और महिला छात्रों के लिए स्वतंत्र मंजिलों के प्रावधान होंगे। भवन विकलांगता के अनुकूल होंगे, और निर्माण गृह 3-सितारा भवन मानक का पालन करता है। निदेशक, संकाय सदस्यों, अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए आवासीय आवास निर्माणाधीन हैं, और वर्ष के अंत तक तैयार हो जाना चाहिए। परिसर के निवासियों के लिए कुछ अत्याधुनिक खेल सुविधाओं के निर्माण का भी प्रावधान किया गया है।

कार्यकारी शिक्षा प्रतिभागियों के लिए प्रबंधन विकास केंद्र के रूप में पहले चरण में कोई सीमांकित भवन नहीं है। ईआरसी को लगता है कि आवासीय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कार्यकारी प्रतिभागियों के लिए कक्षाओं और कुछ एकल आवास कक्षों के लिए उपयुक्त प्रावधान किए जाने की आवश्यकता है। इससे एमडीपी प्रतिभागियों को शहर के एक 5-सितारा होटल में रखने की मौजूदा व्यवस्था की लागत में काफी कमी आएगी।

भाग -10: वैश्वीकरण एवं स्थानीयकरण

आईआईएमएएसआर में वैश्वीकरण और स्थानीयकरण दोनों के अवसर हैं। लक्ष्य के अनुसार, इसे ऐसे संस्थान की आवश्यकता है जो विश्व स्तर पर जुड़ा हो और स्थानीय रूप से उत्तरदायी हो। वैश्विक संपर्क मापदंड, नवाचार के लिए सीखने और गुणवत्ता में निरंतर सुधार की अवसर देता है। यह वैश्विक रैंकिंग में भी सुधार करता है। स्थानीय विशिष्टता के निर्माण का एक महत्वपूर्ण पहलू है, यह देखते हुए कि देश के विभिन्न राज्यों में 20 आईआईएम फैले हुए हैं।

वैश्वीकरण को कई आयामों में विचार करने की आवश्यकता है। यह मंडल के सदस्यों को लाने के लिए उपयोगी है जो विदेशी नागरिक हैं, और फिर जिनके पास अंतरराष्ट्रीय अनुभव है। इसी तरह, संकाय स्तर पर, आईआईएमएएसआर को कुछ ऐसे लोगों को लाना चाहिए जिनके पास विदेशी नागरिकता है, और फिर कुछ जिनके पास अंतर्राष्ट्रीय अनुभव है। आईआईएमएएसआर (जुलाई/अगस्त और दिसंबर/जनवरी आम तौर पर अच्छी तरह से काम करते हैं) में विदेशी संकाय की अल्पकालिक यात्राओं के लिए अवसर प्रदान करना, और आईआईएमएएसआर संकाय के लिए अल्पकालिक शिक्षण, सह-शोधकर्ताओं के साथ काम करना और कॉन्फ्रेंसिंग जैसी गतिविधियों के लिए विदेश यात्रा करना शैक्षणिक मूल्य का होगा। यह आईआईएमएएसआर के वरिष्ठ कर्मचारियों के लिए भी लागू हो सकता है, विशेष रूप से एक प्रेरक और नई प्रथाओं को लाने के अवसर के रूप में, जैसे-जैसे हम संख्या में वृद्धि करते हैं।

छात्र स्तर पर सत्र आदान-प्रदान कार्यक्रम के लिए विदेशी प्रबंध स्कूलों के साथ एमओयू होना आवश्यक है। विदेशी छात्रों को आईआईएमएएसआर की ब्रांड स्थिति में सुधार के अलावा विदेश में एक सत्र के अनुभव से लाभ प्राप्त करने में सक्षम करेगा। अंतर्देशीय एक्सचेंज आईआईएमएएसआर परिसर में विविधता और सीखने की समृद्धि को जोड़ देगा। एक स्थान के रूप में अमृतसर स्वाभाविक रूप से विदेशी छात्रों के लिए एक आकर्षक स्थान है।

दोहरी डिग्री कार्यक्रम की दिशा में कुछ प्रयास किए जा रहे हैं। सामान्य अनुभव यह है कि इसमें कर्षण कम होता है क्योंकि इसका अर्थ है कम से कम एक वर्ष के लिए मुख्य संस्थान से दूर रहना। इसके अलावा, 'पारस्परिकता' संतोषजनक ढंग से काम नहीं करती है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों और डिग्री यह समान स्थिति की नहीं हो सकती है।

आईआईएमएएसआर को अपनी दृश्यता और प्रक्रियाओं में सुधार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग और मान्यता प्राप्त करने की योजना भी शुरू करनी चाहिए।

स्थानीयकरण पर भी कई आयामों में विचार करने की आवश्यकता है। मंडल के ऐसे सदस्य होने चाहिए जिनका स्थानीय उद्योग से सहज संपर्क हो। निश्चित रूप से राज्य सरकार से एक मंडल सदस्य होते है। राज्य में शैक्षिक (अनुसंधान, केस लेखन, कार्यकारी शिक्षा और परामर्श) के अवसरों को सक्षम करने के लिए इन मंडल सदस्यों का लाभ उठाया जाना चाहिए। संकाय को अनुसंधान, केस लेखन और परामर्श पर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो विचार नेतृत्व और प्रभाव के अवसर प्रदान कर सके।

कार्यकारी शिक्षा कार्यनीति का एक स्तंभ क्षेत्र की आर्थिक जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना होना चाहिए। अधिक बौद्धिक उत्तोलन प्राप्त करने के लिए संयुक्त कार्यक्रमों का भी पता लगाया जा सकता है।

राज्य में योगदान हेतु छात्र ऊर्जा और क्षमता का लाभ उठाया जाना चाहिए। सामाजिक भागीदारी परियोजनाएं जो शुरू हुई हैं, वे एक अच्छा अवसर हैं। प्रत्येक वर्ष विशिष्ट मुद्दों पर अनुसंधान और सिफारिशों पर निर्माण के लिए इनकी रणनीति बनाई जानी चाहिए। इस तरह के दृष्टिकोण के साथ, राज्य में कार्यकारी, और संगठन (सरकारी, गैर सरकारी संगठन और निजी) जल्द ही परियोजनाओं की प्रस्तुति पर स्वामित्व का निर्माण करेंगे और बौद्धिक (और कार्यान्वयन योग्य) प्रवचन का पालन करेंगे। उद्यमिता के बारे में सोचने वाले स्थानीय लोगों के लिए मेंटरशिप और इनक्यूबेशन प्रदान करने के लिए उद्यमिता केंद्र (सेंटर ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप) की कल्पना की जा सकती है। मार्गदर्शन करने वाले संकाय को प्रासंगिकता के साथ शोध पत्र लिखने का अवसर मिलेगा, और केस स्टडीज जिनका कक्षा में उपयोग किया जा सकता है।

हमारा मानना है कि सह-पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियां स्वाभाविक रूप से स्थानीय संस्थानों तक पहुंचेंगी।

भाग -11: नैतिकता, उत्तरदायित्व एवं स्थिरता

आईआईएमएएसआर अपने कामकाज के सभी पहलुओं में नैतिकता, जिम्मेदारी और स्थिरता को एकीकृत करने का प्रयास कर रहा है। भले ही यह केवल सात वर्ष पुराना है, आईआईएमएएसआर हमेशा प्रबंधकों को प्रशिक्षित करने की अपनी जिम्मेदारी से अवगत रहा है जो अपने व्यवहार में नैतिक हैं और जो राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकते हैं। वास्तव में, संस्थान 'विश्व स्तर पर जुड़े और स्थानीय रूप से उत्तरदायी' तरीके से 'बुद्धि और निष्ठा के साथ विकासशील नेताओं' को अपने लक्ष्य और दृष्टि के आधारशिलाओं में से एक मानता है। यह विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों से संबंधित इसकी नीतियों और विभिन्न कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में स्पष्ट है। आईआईएमएएसआर यह देश के कानूनों के अनुरूप है और केंद्र सरकार के निर्देशों के अनुरूप सतर्कता सप्ताह का पालन करता है।

लिंग, सामाजिक संबद्धता या आर्थिक स्थिति की भेद किए बिना, प्रवेश प्रक्रिया में सकारात्मक कार्रवाई और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की भर्ती और व्यावसायिक की प्रगति की चिंता किए बिना सभी को अवसर प्रदान करके सामाजिक स्थिरता को संबोधित किया गया है। वर्तमान में निर्माणाधीन स्थायी परिसर को विकसित करने में पर्यावरणीय स्थिरता को संबोधित किया जा रहा है, और सभी भवनों को अत्यधिक ऊर्जा कुशल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। छात्रों द्वारा पाठ्येतर गतिविधियों और संस्थान द्वारा सामाजिक रूप से प्रासंगिक परियोजनाओं के साथ-साथ संकाय और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए मानव संसाधन नीतियां नैतिकता, जिम्मेदारी और स्थिरता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

स्पष्ट रूप से लिखे गए नियमों के माध्यम से, आईआईएमएएसआर अपने छात्र निकाय में अनुशासन के उच्च मानक और नैतिक व्यवहार की अपेक्षा को लागू करता है। छात्रों को शामिल होने के पहले सप्ताह के भीतर इन मामलों में उनसे हमारी अपेक्षाओं के बारे में जागरूक किया जाता है और समय-समय पर नियमों को सुदृढ़ किया जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र अनैतिक प्रथाओं में लिप्त न हों इसलिए सख्त नीतिगत दिशानिर्देश हैं। संस्थान में किसी भी प्रकार के कदाचार या कदाचार के लिए दोषी पाए जाने वाले किसी भी छात्र को गंभीर दंड दिया जाता है। साहित्यिक चोरी पर सत्र और लिंग संबंधी मुद्दों और विकलांगों की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता नए छात्रों के लिए उन्मुखीकरण यह शिक्षा कार्यक्रमों का भाग हैं।

संस्थान में यौन उत्पीड़न या रैगिंग के किसी भी आरोप की जांच के लिए आईआईएमएएसआर की एक आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) है। इसका उद्देश्य भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुरूप संस्थान में पढ़ने वाले या काम करने वाले सभी छात्रों और कर्मचारियों के लिए उत्पीड़न मुक्त, मैत्रीपूर्ण कार्य वातावरण बनाना है। आंतरिक शिकायत समिति संस्थान के भीतर महिलाओं

के लिए समान अवसर सुनिश्चित करती है और कर्मचारियों और छात्रों के बीच लैंगिक संवेदनशीलता की दिशा में काम करती है। यह समयबद्ध तरीके से यौन उत्पीड़न की शिकायतों को दूर करने का काम करता है।

इसके अलावा, कर्मचारियों और अधिकारियों के विकास और मूल्यांकन की देखभाल करने वाली दो अन्य समितियाँ भी हैं, जो कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए समय-समय पर संवेदीकरण का भी ध्यान रखती हैं।

नैतिकता और स्थिरता पर पाठ्यक्रम भी संस्थान के शिक्षा कार्यक्रमों का भाग हैं। व्यापार नैतिकता (बिजनेस एथिक्स) पर एक पाठ्यक्रम यह एमबीए, एमबीए-एचआर और कार्यकारी एमबीए के छात्रों को उनके दूसरे वर्ष में पारिस्थितिक और सामाजिक संदर्भ में संवेदनशील बनाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही, एमबीए-बीए के छात्रों के लिए व्यापार कानून नैतिकता पर एक पाठ्यक्रम की प्रस्तुती की जाती है।

आईआईएमएएसआर समाज के वंचित समूहों और अलग-अलग विकलांग छात्रों के लिए प्रवेशों के आरक्षण की नीति का पालन करता है।

अपनी पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों के अलावा समाज में योगदान देने के लिए, आईआईएमएएसआर वास्तविक जीवन की सामाजिक समस्याओं को दूर करने और इन समस्याओं को कम करने के लिए बौद्धिक, प्रबंधकीय और तकनीकी कौशल का उपयोग करने के लिए जिला प्रशासन, अमृतसर के साथ सक्रिय रूप से सहभागी है। छात्रों को सामाजिक मुद्दों और चुनौतियों के प्रति संवेदनशील बनाने और उन्हें सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाने के लिए, संस्थान ने 2020 में सामाजिक भागीदारी परियोजनाओं (एसआईपी) नामक एक कार्यक्रम शुरू किया। एसआईपी टीम नि: शुल्क परामर्श सेवाएं प्रदान करने के लिए संगठनों के साथ जुड़ती है। वर्ष 2020-21 के दौरान, ऐसी पांच परियोजनाएं शुरू की गईं, जबकि वर्ष 2021-22 में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जब ऐसी 21 परियोजनाएं शुरू की गई हैं, और वर्तमान में कार्यान्वित की जा रही हैं। जबकि वर्ष 2020-21 में, इन परियोजनाओं ने अमृतसर जिला प्रशासन के तहत सेवा केंद्रों के वितरण तंत्र में सुधार किया, वर्ष 2021-22 में जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम मे सेवा केंद्रों के प्रभाव मूल्यांकन से लेकर सफल वितरण में दर्द बिंदुओं की खोज तक परियोजनाएं स्वरूप में विविधता थीं।

कोविड-19 महामारी के लिए आईआईएमएएसआर की प्रतिक्रिया पर्याप्त है। अस्थायी परिसर में ऑफलाइन से ऑनलाइन कार्यक्रम वितरण में संक्रमण के लिए आईटी बुनियादी ढांचे का महत्वपूर्ण उन्नयन किया गया है। साथ ही, छात्रों और कर्मचारियों के लिए आपातकालीन और अस्पताल में देखभाल के लिए पास के एक अस्पताल के साथ व्यवस्था की जाती है। समय-समय पर कोविड परीक्षण, एक छात्रावास भवन को डॉक्टर के कक्ष में बदलना, और ऑनलाइन तनाव प्रबंध सत्र शुरू किए गए। संस्थान और छात्रावास

परिसर की नियमित सफाई और संकाय सदस्यों द्वारा छात्रों को कोविड उपयुक्त व्यवहार बनाए रखने के लिए परामर्श भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

भाग -12: निष्कर्ष

1. आईआईएम अमृतसर, स्थापना के बाद से अपने सातवें वर्ष में, इसने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है और निश्चित रूप से अपने 'स्टार्ट-अप' चरण से एक 'स्थिरता' चरण में एक असाधारण प्रबंध संस्थान बनने के लिए आगे बढ़ता है जो विश्व स्तर पर जुड़ा हुआ है और स्थानीय रूप से उत्तरदायी है। पंजाब राज्य और उत्तरी क्षेत्र इस मिशन के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं।
2. मंडल को आईआईएम अधिनियम के अनुसार आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ वैश्विक और स्थानीय विषयों को सुनिश्चित करते हुए, 15 सदस्यों के अपने पूर्ण पूरक की खोज करनी चाहिए।
3. वर्ष 2022-23 के दौरान जल्द से जल्द तैयार होने वाले नए परिसर में आईआईएमएएसआर की कई आकांक्षाएं बनी हुई हैं। मंडल द्वारा निरंतर और संभवत: चरणबद्ध सुविधा और निगरानी से मदद मिलेगी।
4. मंडल के समर्थन से, वर्तमान निदेशक के नेतृत्व में गुणवत्ता पर ध्यान देने के साथ बहुत अधिक वृद्धि लाई गई है। वर्ष 2023-24 में सरकारी अनुदानों के रुकने, परिसर के बुनियादी ढांचे के पूंजी ऋणों के भुगतान की शुरुआत और नए निदेशक के चयन के लिए समय देखा जा रहा है। इस पर मंडल को ध्यान देने की आवश्यकता है। एक नकदी प्रवाह विश्लेषण मूल्य का होगा। निर्णय लेने के साथ प्रणाली और प्रक्रियाओं को स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करना निदेशक के लिए आवश्यक नहीं होगा।
5. मंडल के लिए यह उपयोगी होगा कि वह अध्यक्ष, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और पूर्व छात्रों के प्रतिनिधियों के संदर्भ में निरंतरता के बारे में सोचें, ताकि एक ही समय में बहुत से लोगों को कदम न उठाना पड़े।
6. वर्तमान कार्यक्रमों के स्थिर होने और संकाय आधार में वृद्धि के बाद, पदवी कार्यक्रमों में और वृद्धि को सावधानी के साथ संपर्क किया जाना चाहिए।
7. पदवी और अन्य लंबी अवधि के कार्यक्रमों को पंजाब और क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के साथ सहयोगात्मक उपक्रम के रूप में खोजा जा सकता है।
8. कैट और जीमैट के अलावा, एक उच्च गुणवत्ता वाले आईआईएम अमृतसर प्रवेश परीक्षा को कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए एक वैकल्पिक चैनल के रूप में माना जा सकता है।
9. छात्र विविधता को 'लिंग', 'गैर-इंजीनियर' और 'समावेशन' पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
10. स्नातक स्तर के अध्ययन के तीन और पांच वर्ष बाद के पूर्व छात्रों को प्रोफाइल करने के लिए एक प्रणाली स्थापित करने से आईआईएमएएसआर को यह देखने में मदद मिलेगी कि क्या इसकी दृष्टि प्राप्त की जा रही है। इससे मान्यता और रैंकिंग में भी मदद मिलेगी।

11. समावेशन पर ध्यान देने के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षकों की भर्ती पर जोर देना जारी रखना चाहिए, ताकि यथाशीघ्र, यथाशीघ्र, अंशांकित तरीके से 50 तक पहुंच सकें। यह प्रोफेसर स्तर पर कुछ की भर्ती करने में मदद करेगा। यह सब युवा संकाय पर प्रशासनिक भार को कम करेगा, उन्हें प्रबंधन शिक्षा, सलाहकार और विचारशील नेतृत्व के लिए अनुसंधान के लिए अधिक समय देगा।
12. आईआईएम अमृतसर के अंदर सहयोगात्मक अनुसंधान और पाठ्यक्रमों में स्वयं के लेखन के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संकाय कार्य मानदंडों को इसे पहचानना चाहिए।
13. विशेष रूप से स्थानीय रूप से उत्तरदायी होने की नीति की दिशा में पत्रिका-लेखन पर ध्यान देना आवश्यक है।
14. एक स्थायी संकाय विकास और मूल्यांकन समिति का यदि आवश्यक हो, तो कुछ वरिष्ठ संकाय अन्य आईआईएम में हाल ही में सेवानिवृत्त (या काम करना जारी रखें) के साथ गठन किया जाना चाहिए। इससे संकाय विकास पहल, संकाय मूल्यांकन, भर्ती और पदोन्नति निर्णय और संकाय कार्य मानदंडों की निगरानी में मदद मिलेगी।
15. अंतःविषय अनुसंधान केंद्र यह संकाय अनुसंधान ऊर्जा को प्रभावकारी योगदान में समर्थन और दिशा देने में मदद करेगा। केंद्रों पर सोच-समझकर और विकसित तरीके से विचार करने के लिए एक प्रक्रिया की आवश्यकता होगी।
16. प्रबंधकीय और पर्यवेक्षी स्तर के कर्मचारियों की भर्ती और क्षमता विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सक्षम कर्मचारी संकाय से एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यभार ले सकते हैं।
17. आईआईएमएएसआर को अंतरराष्ट्रीय दोहरी डिग्री कार्यक्रम से अधिक, एक अवधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय छात्र विनिमय कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
18. स्थानीय संगठनों और खुले नामांकन पर केंद्रित कार्यकारी शिक्षा विकसित करने का अवसर है।
19. कार्यकारी शिक्षा के लिए उपयोग के लिए नए परिसर में बुनियादी ढांचे का लाभ उठाया जाना चाहिए। लंबे समय में, अपने अधिशेष के साथ एक प्रबंधन विकास केंद्र की योजना बनाई जा सकती है।
20. आईआईएमएएसआर को आंतरिक, रणनीतिक समीक्षाओं सहित आवधिक के माध्यम से अधिक से अधिक संकाय स्वामित्व की संस्कृति की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

प्रदर्श-1

ईआरसी के साथ बैठकों की अनुसूची

पहला दिन: 29.12.2021 (बुधवार)					
क्र. सं.	**समय**		**बैठक की अवधि/स्थल**	**कार्यक्रम / गतिविधि का नाम**	**संकाय/कर्मचारी/अन्य का नाम**
	यहाँ से	**यहाँ तक**			
1.	1000 बजे	1100 बजे	1 घंटा सम्मेलन कक्ष	शासी मंडल	शासी मंडल के सदस्य: आभासी मोड के माध्यम से
2.	1100 बजे	1115 बजे	15 मिनिट	अवकाश	---
3.	1115 बजे	1200 बजे	45 मिनिट सम्मेलन कक्ष	साधारण	प्रो. नागराजन रामामूर्ति, निदेशक
4.	1200 बजे	1230 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	साधारण	प्रो. अमित गुप्ता, प्रभारी संकायाध्यक्ष
5.	1230 बजे	1315 बजे	45 मिनिट सम्मेलन कक्ष	एमबीए	1. प्रो महिमा गुप्ता, अध्यक्ष 2. प्रो. पंकज गुप्ता, सह-अध्यक्ष
6.	1315 बजे	1415 बजे	1 घंटा	भोजन अवकाश	---
7.	1415 बजे	1500 बजे	45 मिनिट सम्मेलन कक्ष	1.एमबीए विश्लेषिकी 2. एमबीए मानव संसाधन	1. प्रो. हरप्रीत कौर, अध्यक्ष, एमबीए विश्लेषिकी 2. प्रो. श्वेता सिंह, अध्यक्ष, एमबीए मानव संसाधन
8.	1500 बजे	1515 बजे	15 मिनिट	अवकाश	---
9.	1515 बजे	1600 बजे	45 मिनिट सम्मेलन कक्ष	1. ईएमबीए 2. कार्यकारी शिक्षा	1. प्रो. मुकेश कुमार, अध्यक्ष ईएमबीए 2. प्रो. वर्तिका दत्ता, अध्यक्ष कार्यकारी शिक्षा 3. श्री अंशुल माथुर
10.	1600 बजे	1630 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	डॉक्टरेट कार्यक्रम	1. प्रो. सुरेंद्र राव कोमेरा, अध्यक्ष 2. प्रो. अमित गुप्ता
11.	1630 बजे	1700 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	अनुसंधान और प्रकाशन	1. प्रो. अमित गुप्ता 2. प्रो. हरप्रीत कौर 3. प्रो. अश्वथी अशोकन अजिता
12.	1700 बजे	1710 बजे	10 मिनिट	अवकाश	---
13.	1710 बजे	1750 बजे	40 मिनिट सभागार	साधारण	संकाय से चर्चा (14 सदस्यों का एक समूह)
14.	1750 बजे	1830 बजे	40 मिनिट सभागार	साधारण	संकाय से चर्चा (14 सदस्यों का एक समूह)

दुसरा दिन: 30.12.2021 (गुरूवार)					
क्र. सं.	**समय**		**बैठक की अवधि/स्थल**	**कार्यक्रम / गतिविधि का नाम**	**संकाय/कर्मचारी/अन्य का नाम**
	यहाँ से	**यहाँ तक**			
1.	0800 बजे	0915 बजे	1 घंटा 15 मिनिट स्थायी परिसर का दौरा	संरचना (इंफ्रास्ट्राकचर)	1. श्री. राजीव रंजन सिंह, पीसीएम 2. श्री. धरम कानार, एमईपी
2.	1015 बजे	1100 बजे	45 मिनिट सम्मेलन कक्ष	रोजगार (प्लेसमेंट)	1. प्रो. गुरबीर सिंह, अध्यक्ष 2. प्रो. रंजन कुमार, सह-अध्यक्ष 3. श्री. संजय कुमार त्रिपाठी, वरिष्ठ रोजगार अधिकारी
3.	1100 बजे	1115 बजे	15 मिनिट	अवकाश	---
4.	1115 बजे	1135 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	विपणन विभाग**	1. प्रो. अरुण कुमार कौशिक 2. प्रो. गुरबीर सिंह 3. प्रो. रश्मि कुमारी 4. प्रो. सुजीत जगदाले 5. प्रो. अश्वथी अशोकन अजिता
5.	1135 बजे	1155 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	संचार विभाग**	1. प्रो. मुकेश कुमार 2. प्रो. रंजन कुमार
6.	1155 बजे	1215 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	वित्त, लेखा एवं नियंत्रण विभाग**	1. प्रो. सुरेंद्र राव कोमेरा 2. प्रो. पंकज गुप्ता 3. प्रो. उदयन शर्मा 4. प्रो. प्रियेश वलिया पुरयिल 5. प्रो. नबेंदु पॉल
7.	1215 बजे	1235 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	संगठनात्मक व्यवहार एवं मानव संसाधन विभाग**	1. प्रो. अमित गुप्ता 2. प्रो. वर्तिका दत्ता 3. प्रो. दिव्या त्रिपाठी 4. प्रो. श्वेता सिंह 5. प्रो. रविशंकर वेंकट कोम्मू

8.	1235 बजे	1255 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	उत्पादन एवं संचालन प्रबंध विभाग**	1. प्रो महिमा गुप्ता 2. प्रो. हरप्रीत कौर 3. प्रो. प्रशांत वी आनंद 4. प्रो अंकित शर्मा 5. प्रो. शुभब्रत चक्रवर्ती
9.	1255 बजे	1315 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	अर्थशास्त्र विभाग**	1. प्रो. पवनीत सिंह 2. प्रो. चेतन चित्रे 3. प्रो. प्रशांत पोद्दार
10.	1315 बजे	1410 बजे	55 मिनिट	भोजन अवकाश	---
11.	1410 बजे	1430 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	कार्यनीति विभाग**	1. प्रो. संतोष कुमार तिवारी
12.	1430 बजे	1450 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	आईटी एवं कम्प्यूटेशनल सिस्टम विभाग**	1. प्रो. सुनील रेड्डी कुंदरू 2. प्रो सिद्धार्थ गौरव माझी
13.	1450 बजे	1510 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	पुस्तकालय और अनुसंधान	1. प्रो. रविशंकर वेंकट कोम्मू 2. श्री दीपक कुकरेती
14.	1510 बजे	1525 बजे	15 मिनिट	अवकाश	---
15.	1525 बजे	1545 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	आईटी और डिजिटल संसाधन	1. प्रो. सुनील रेड्डी कुंदरू 2. प्रो सिद्धार्थ गौरव माझी 3. श्री दिलबाग सिंह
16.	1545 बजे	1605 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	प्रत्यायन और रैंकिंग	1. प्रो. सुजीत जगदाले 2. प्रो. अश्वथी अशोकन अजिता 3. प्रो. उदयन शर्मा 4. प्रो. शुभब्रत चक्रवर्ती 5. प्रो. रविशंकर कोम्मू
17.	1605 बजे	1625 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	अंतरराष्ट्रीय संबंध	1. प्रो. दिव्या त्रिपाठी 2. प्रो. पंकज गुप्ता 3. प्रो. चेतन चित्रे 4. प्रो. पवनीत सिंह
18.	1625 बजे	1645 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	पूर्व छात्र गतिविधि	1. प्रो. हरप्रीत कौर 2. प्रो. मुकेश कुमार झा
19.	1645 बजे	1705 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्र गतिविधि	1. प्रो. संतोष कुमार तिवारी 2. प्रो. चेतन चित्रे 3. प्रो. अरुण कुमार कौशिक

					4. प्रो. अश्वथी अशोकन अजिता 5. प्रो. अंकित शर्मा
20.	1705 बजे	1715 बजे	10 मिनिट	अवकाश	---
21.	1715 बजे	1730 बजे	15 मिनिट सम्मेलन कक्ष	ईआरपी	1. प्रो. प्रशांत वी आनंद 2. प्रो. सुनील रेड्डी कुंदरू 3. श्री. लक्ष्मणदेव बी गोहिल 4. डॉ. सिमरनदीप सिंह थापर 5. इंजी. दिलबाग सिंह 6. सुश्री शिवली राठौड़
22.	1730 बजे	1750 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	मीडिया और जनसंपर्क	1. प्रो. मुकेश कुमार 2. प्रो. हरप्रीत कौर 3. प्रो. दिव्या त्रिपाठी 4. प्रो. वर्तिका दत्ता
23.	1750 बजे	1810 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	नवाचार नीति समिति	1. प्रो. चेतन चित्रे, संयोजक 2. प्रो. अश्वथी अशोकन अजिता 3. प्रो. उदयन शर्मा 4. प्रो. प्रियेश वलिया पुरयिल
24.	1810 बजे	1830 बजे	20 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्रवृत्ति समिति	1. प्रो. अरुण कुमार कौशिक 2. प्रो. शुभब्रत चक्रवर्ती 3. प्रो. अंकित शर्मा 4. प्रो. हरप्रीत कौर 5. प्रो. सुरेंद्र राव कोमेरा

तीसरा दिन: 31.12.2021 (शुक्रवार)					
क्र. सं.	**समय**		**बैठक की अवधि/स्थल**	**कार्यक्रम / गतिविधि का नाम**	**संकाय/कर्मचारी/अन्य का नाम**
	यहाँ से	**यहाँ तक**			
1.	0900 बजे	0930 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	प्रवेश	1. प्रो. पवनीत सिंह 2. प्रो. अमित गुप्ता
2.	0930 बजे	1000 बजे	30 मिनिट सीआर-ई	छात्र	एमबीए 06: प्रत्यक्ष
3.	1000 बजे	1030 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्र	एमबीए 07: आभासी मोड के माध्यम से

4.	1035 बजे	1130 बजे	55 मिनिट सम्मेलन कक्ष	नियोक्ता	आभासी मोड के माध्यम से
5.	1130 बजे	1145 बजे	15 मिनिट	अवकाश	---
6.	1145 बजे	1200 बजे	15 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्र	एमबीए विश्लेषिकी: आभासी मोड के माध्यम से
7.	1200 बजे	1215 बजे	15 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्र	एमबीए मानव संसाधन: आभासी मोड के माध्यम से
8.	1215 बजे	1230 बजे	15 मिनिट सम्मेलन कक्ष	छात्र	पीएचडी: प्रत्यक्ष
9.	1230 बजे	1245 बजे	15 मिनिट सम्मेलन कक्ष	वित्त और लेखा	1. श्री. लक्ष्मणदेव बी गोहिल, सीएफए
10.	1245 बजे	1315 बजे	30 मिनिट सम्मेलन कक्ष	1. भवन और निर्माण 2. प्रशासनिक अधिकारी (शैक्षिक एवं प्राप्ति प्रशासन) 3. प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन और प्रशासन)	1. श्री. राजीव रंजन सिंह, परियोजना निर्माण प्रबंधक 2. श्री. धरम कनार, एमईपी 1. डॉ. सिमरनदीप सिंह थापरी 1. सुश्री शिवली राठौड़
11.	1315 बजे	1400 बजे	45 मिनिट	भोजन अवकाश	----
12.	1400 बजे	1500 बजे	1 घंटा सम्मेलन कक्ष	निदेशक के साथ समापन बैठक	प्रो. नागराजन रामामूर्ति, निदेशक

प्रदर्श-2

ईआरसी को प्रस्तुत सूचना की सूची

क्र. सं.	साझा किया डेटा / जानकारी	हार्ड/सॉफ्ट कॉपी	टिप्पणी
1.	मूल्यांकन समिति के साथ बैठक की अनुसूची	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
2.	पदवी प्रदान करने वाले कार्यक्रम	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
3.	छात्र जनसांख्यिकी और स्नातक	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
4.	रोजगार	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
5.	संकाय प्रोफ़ाइल	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
6.	कार्यकारी शिक्षा	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
7.	परामर्श	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
8.	रैंकिंग और प्रत्यायन	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
9.	छात्र गतिविधि डेटा	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
10.	पुस्तकालय व्यय	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
11.	आईटी व्यय	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
12.	वित्तीय डेटा	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
13.	पूर्व छात्र संबंध	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
14.	सामाजिक भागीदारी परियोजनाएं	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
15.	अनुसंधान गुणवत्ता	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
16.	अनुसंधान निष्पत्ति	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
17.	ईएमबीए प्रवेश रिपोर्ट	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
18.	एमबीए-07, एमबीए बीए, एमबीए एचआर प्रवेश रिपोर्ट	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
19.	नीतियां/ नियमावली/महत्वपूर्ण परिपत्र 1. संकाय नियमावली 2021-22 2. एमबीए शैक्षिक हैंडबुक बैच (2021-23) 3. प्रथम विनियम 4. संकाय रोजगार की शर्तें	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
20.	1.गैर-शिक्षण कर्मचारी भर्ती नियम 2. शैक्षिक सहयोगी कार्यक्रम नीति 3.परामर्शदाताओं की नियुक्ति हेतु प्रक्रियाएं और दिशानिर्देश 4.सतर्कता नीति 5. कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम पर नीति 6. आंतरिक समिति नीति और प्रक्रिया 7. कंप्यूटिंग और नेटवर्क संसाधनों के उपयोग पर नीति 8. अनुसंधान एवं विकास पहुंच नियमावली	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)

	9. रोजगार की नियमित कर्मचारी शर्तें (संशोधित) 10. क्रय समिति का गठन 11. वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन (संशोधित) 12. संकाय कार्य मानदंड 13. व्यय और प्रावधानों पर नीति 14. पुस्तकालय संसाधनों की खरीद 15. संकाय विकास भत्ता नीति 16. संकाय रोजगार की शर्तें 17. नियमित कर्मचारी रोजगार की शर्तें 18. वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन 19. यात्रा नीति (नियमित कर्मचारी) 20. यात्रा नीति (संविदा कर्मचारी और परामर्शदाता) 21. कंप्यूटर हार्डवेयर के आवंटन से संबंधित नीति 22. संकाय अवकाश नियम (नियमित और संविदात्मक) 23. गैर-शिक्षण अवकाश नियम (नियमित और संविदात्मक) 24. वस्तु की खरीद पर नीति और फ़्लोचार्ट 25. माइलेज भत्ता नीति		
21.	समितियों और संगठन की सूची	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
22.	स्थापना से स्नातक छात्रों का डेटा	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
23.	लक्ष्य एवं ध्येय पर शासी मंडल का निष्कर्ष	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
24.	स्थापना से पाठ्यक्रम की रूपरेखा, अतिथि संकाय, पाठ्यक्रम प्रतिक्रिया, प्रस्तावित वैकल्पिक पाठ्यक्रम और आवश्यक वैकल्पिक क्रेडिट	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
25.	आईआईएम अमृतसर ने कोविड-19 महामारी पर दि गई प्रतिक्रिया पर रिपोर्ट	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
26.	संकाय प्रकाशन सह-लेखक	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
27.	शासी मंडल की सूची	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
28.	सभी संकाय सदस्यों के अदयावत प्रोफ़ाइल	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
29.	सभी अथिति संकाय सदस्यों के अदयावत प्रोफ़ाइल	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
30.	चुनौतियों और योगदान पर विभागवार पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन 1. विपणन 2. संचार	हार्ड (मुद्रित) कॉपी / सॉफ्ट कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से) / ईमेल द्वारा

	3. वित्तीय, लेखा एवं नियंत्रण 4. ओबी एवं एचआर 5. उत्पादन एवं संचालन प्रबंध 6. अर्थशास्त्र 7. कार्यनीति 8. आईटी एवं संगणकीय प्रणाली 9. प्रशासनिक एवं शैक्षणिक प्रशासन डेटा		
31.	पहले संविदा पर और बाद में नियमित किए गए संकायों की सूची	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
32.	एमबीए कार्यक्रम के संबंध में स्पष्टीकरण	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
33.	निदेशक के प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए मापदंड (केआरए)	हार्ड (मुद्रित) कॉपी	प्रत्यक्ष (व्यक्तिगत रूप से)
34.	एमबीए, एमबीए बीए और एमबीए एचआर (2021-23) के लिंग और पूर्वाधार के अनुसार डेटा और शुल्क संरचना	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा
35.	ईएमबीए छात्र जनसांख्यिकी और शुल्क संरचना (2021-23)	सॉफ्ट कॉपी	ईमेल द्वारा

प्रदर्श-3

वित्तीय विवरण

आय और व्यय का वर्षवार विवरण (लाख रुपये में)					
क्र. सं.	**आय का स्वरूप**	**2018-19**	**2019-20**	**2020-21**	**2021-22 अनुमान**
1.	शैक्षिक आय	1021.86	1363.69	2193.57	3432.13
2.	शैक्षिक आय में वृद्धि प्रतिशत		33.45	60.86	56.46
3.	अनुदान	398.21	1302.45	2053.55	2380.00
4.	अन्य आय	25.64	51.1	97.59	45.00
	कुल आय	**1445.71**	**2717.24**	**4344.71**	**5857.13**
1.	**व्यय (मूल्यह्रास को छोड़कर)**	**1131.51**	**1495.98**	**2097.96**	**3572.85**
2.	व्यय में वृद्धि प्रतिशत		32.21	40.24	70.30
	बैलेंस शीट के अनुसार अधिशेष	**314.20**	**1221.26**	**2246.75**	**2284.28**
	अधिशेष में वृद्धि प्रतिशत		**288.69**	**83.97**	**1.67**
पूंजीगत व्यय का वर्षवार विवरण (लाख रुपये में)					
क्र. सं.	**आय का स्वरूप**	**2018-19**	**2019-20**	**2020-21**	**2021-22**
1.	अनुदान शेष अग्रेषित	1291.49	992.75	1169.57	387.76
2.	शेष अनुदान पर अर्जित ब्याज	34.48	55.95	38.79	0
3.	प्राप्त पूंजी अनुदान	213.00	806.00	0	0
	कुल	**1538.97**	**1854.70**	**1208.36**	**387.76**
1.	पूंजीगत व्यय	546.22	685.13	820.60	900.00
	शेष	**992.75**	**1169.57**	**387.76**	**-512.24**
कॉर्पस का वर्षवार विवरण (लाख रुपये में)					
क्र. सं.	**आय का स्वरूप**	**2018-19**	**2019-20**	**2020-21**	**2021-22**
1.	कॉर्पस शेष अग्रेषित	1480.91	1940.53	3302.59	5721.45
2.	कॉर्पस पर अर्जित ब्याज	145.42	140.80	172.11	286.05
3.	बैलेंस शीट के अनुसार अधिशेष	314.20	1221.26	2246.75	2284.28
	कॉर्पस से पूंजीगत व्यय				512.24
	कुल	**1040.53**	**3302.59**	**5721.45**	**7779.54**
	कॉर्पस पर अर्जित ब्याज का प्रतिशत		70.19	73.24	35.97